गरजते-बरसते सावन के बीच खनकते गीत और फ़िल्मी दुनिया एवं अन्य आलेख.

गोवर्धन यादव

अनुक्रम.

परिचय

*__नाम__--गोवर्धन यादव

*__पिता-.__ स्व.श्री.भिक्कुलाल यादव

***जन्म स्थान -मुलताई.(जिला) बैतुल.म.प्र.**

* **जन्म तिथि**- 17-7-1944 *शिक्षा - स्नातक

*तीन दशक पूर्व कविताऑं के माध्यम से साहित्य-जगत में प्रवेश

*देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का अनवरत प्रकाशन

*आकाशवाणी से रचनाओं का प्रकाशन

*करीब पैतीस कृतियों पर समीक्षाएं

*__कृतियाँ__ * महुआ के वृक्ष (कहानी संग्रह) सतलुज प्रकाशन पंचकुला(हरियाणा)

*तीस बरस घाटी (कहानी संग्रह,) वैभव प्रकाशन रायपुर (छ,ग.)

पीडीएफ ईबुक – गोवर्धन यादव का कविता संग्रह - बचे हुए समय में
http://www.rachanakar.org/2014/11/blog- post_51.html

पीडीएफ ईबुक : गोवर्धन यादव का लघुकथा संग्रह http://www.rachanakar.org/2014/11/blog-post_627.html

पीडीएफ ई बुक : गोवर्धन यादव का कहानी संग्रह - तीस बरस घाटी
http://www.rachanakar.org/2014/11/blog- post_969.html

: ई-बुक : कौमुदी महोत्सव - हमारे तीज त्यौहार http://www.rachanakar.org/2015/03/blog-post_444.html

पीडीएफ ईबुक – गोवर्धन यादव का कहानी संग्रह - महुआ के वृक्ष
http://www.rachanakar.org/2014/11/blog-post_670.html

देश-विदेश की यात्राएं.

https://hindi.pratilipi.com/govardhan-yadav/ghumakkadi-romanchit-kar-dene-waali-yaatraaye
भारत के पर्व और त्योहार.
https://hindi.pratilipi.com/govardhan-yadav/bharat-me-parv-tyoharo-ki-shrinkhala-bhag-1

भारत के पर्व और त्योहार-पार्ट-२
https://hindi.pratilipi.com/govardhan-yadav/bharat-me-parv-tyoharo-ki-shrinkhala-2

∗**सम्मान**∗ बीस से अधिक साहित्यिक मंचों द्वारा सम्मानित

∗**विशेष उपलब्धियाँ:-**औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग के सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित विषयों तथा गृह मंत्रालय,राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित नीति में सलाह देने के लिए वाणिज्य और उद्धोग मंत्रालय,उद्धोग भवन नयी दिल्ली में "सदस्य" नामांकित

(2)केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय(मानव संसाधन विकास मंत्रालय) नयी दिल्ली द्वारा_कहानी संग्रह"महुआ के वृक्ष" तथा "तीस बरस घाटी" की खरीद की गई.

(३) कई कहानियाँ का उर्दू, मराठी, राजस्थानी, उडिया, सिंधी,भाषाओं में रुपान्तरित की गईं.

(2) **हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए थाईलैण्ड, नेपाल, मारीशस, इन्डोनेशिया-मलेशिया.भूटान,बंगलादेश आदि देशों का भ्रम**

∗**संप्रति -** सेवानिवृत पोस्टमास्टर (एच.एस.जी.1)
संयोजक राष्ट्र भाषा प्रचार समिति जिला इकाई छिंन्दवाड़ा (म.प्र.) 480-001
फ़ोन.नम्बर–07162-246651 (चलित) 09424356400
Email= yadav.goverdhan@rediffmail.com
(2) goverdhanyadav44@gmail.com

----

1 शौर्य,साहस,शक्ति, और करुणा की प्रतिमूर्ति- कैप्टन लक्ष्मी सहगल

कैप्टन लक्ष्मी सहगल जी का नाम जुबान पर आते ही सिर श्रद्धा के साथ झुक जाता है, हाथ अपने आप जुड़ जाते हैं और मन गर्व और गौरव के साथ भर उठता है. भारत भूमि की इस लाड़ली सपूत को हमारा नमन.

मद्रास उच्च न्यायालय के सफ़ल वकील डा. ए. स्वामिनाथन और समाज सेविका व स्वाधीनता सेनानी अम्मुकुट्टी के घर सन 24 अक्टूबर 1914 को एक बेटी ने जन्म लिया. परंपरावादी तमिल परिवार के घर प्रथम बेटी का जन्म होना सौभाग्य की तरह माना और उसका नाम रखा गया **लक्ष्मी स्वामिनाथन**.

अपने बाल्यावस्था से ही वे कुशाग्र बुद्धि की थी. 1930 में अपने पिता की आकस्मिक मृत्यु के बाद उन्होंने साहस नहीं खोया और अनेकानेक कठिनाइयों का सामना करते हुए 1932 में विज्ञान में स्नातक परीक्षा पास की. सन 1938 में उन्होंने मद्रास मेडिकल कालेज से एम.बी.बी.एस. किया और अगले ही वर्ष 1939 में वे बच्चों के रोगों की विशेषज्ञ बनीं. कुछ दिन भारत में प्रैक्टिस करने के बाद वे 1940 में सिंगापुर चली गईं.

बचपन से ही वे राष्ट्रवादी आंदोलन से प्रभावित थीं. महात्मा गांधी जी ने जब विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के लिए आंदोलन छॆड़ा, तब उन्होंने इस यज्ञ में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया. सिंगापुर जैसी विदेशी धरती पर भी उनका देश प्रेम हिलोरे लेता रहा. वहाँ रहते हुए उन्होंने भारत से आए अप्रवासी मजदूरों के लिए निःशुल्क चिकित्सालय खोला, साथ ही वे स्वतंत्रता संघ की सदस्य भी बनी.

1941 में युद्ध के घने काले मंडराने लगे थे, तब डा.लक्ष्मी सिंगापुर में मलाया के जंगलों में मजदूरों का इलाज कर रही थीं. युद्ध की आशंका के चलते अनेक लोगों ने देश लौटने का मन बनाया परंतु डा.लक्ष्मी नहीं लौटीं और भूमिगत रहकर घायल सैनिकों की सेवा करती रहीं. सैनिकों की सेवा-सुश्रुषा करते हुए उन्होंने अनुभव किया कि अंग्रेजों के मुकाबले जापानियों का झुकाव भारतीयों के प्रति है और वे सच्चे मन से उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार भी करते हैं. 1942 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब अंग्रेजों ने सिंगापुर को जापानियों के हवाले कर दिया, तब उन्होंने आहत युद्धबंदियों के लिए काफ़ी काम किए. इस युद्ध में जापानी सेना ने सिंगापुर में ब्रिटिश सेना पर आक्रमण किया उस समय ब्रिटिश सेना की ओर से लड़ रहे भारतीय सैनिकों के मन में अपने देश की स्वतंत्रता के लिए काम करने का विचार उठ रहा था. 19 फ़रवरी 1942 को नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिन्द फ़ौज का गठन किया. इस तरह 1943 को सिंगापुर की धरती पर नेताजी का ऐतिहासिक पदार्पण हुआ. वे नेताजी के विचारों से काफ़ी प्रभावित हुईं और उन्होंने इस पवित्र अभियान में शामिल होने की अपनी इच्छा जाहिर की. नेताजी युद्ध की विभिषिका से भलि-भांति परिचित थे. एक महिला को सेना में भर्ति करने का मतलब भी वे जानते थे. वे कुछ हिचकिचाए पर डा.लक्ष्मी के बुलंद इरादों को देखते हुए उन्हें हामी भरनी पड़ी. उन्होंने २० महिलाओं को तैयार किया और 303 बोर की रायफ़लों के साथ नेताजी को “गार्ड आफ़ आनर” दिया.

नेताजी ने उन्हें पहली महिला रेजीमेंट की बागडोर सौंप दी. आजाद हिन्द फ़ौज की पहली महिला रेजीमेन्ट ने वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई के सम्मान में अपनी रेजीमेन्ट का नाम **“झांसी रेजीमेन्ट”** नाम रखा. 22 अक्टूबर 1943 को डा.लक्ष्मी स्वामिनाथन बतौर कैप्टन रानी झांसी रेजीमेन्ट में कप्तान के पद प्रतिष्ठित हुईं. इस पद पर कार्य करते हुए उन्होंने धीरे-धीरे अपनी फ़ौज की संख्या बढ़ाने का प्रयत्न किया. इस तरह उनकी रेजीमेन्ट में महिलाओं की संख्या 150 तक जा पहुँची. अपने अदम्य साहस, शौर्य और काम करने के अद्भुत तरीकों को देखते हुए उन्हें कर्नल का पद मिला. इस तरह उन्हें एशिया की **प्रथम महिला कर्नल** बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. सन १९४३ में सुभाषचंद्र बोस की “आरजी हुकूमते हिन्द” सरकार में महिला विभाग की केबिनेट मंत्री बनी. डा.लक्ष्मी नेताजी की छाया बनकर साथ रहतीं. उन्होंने नेताजी के साथ बैंकाक की यात्रा की और थाईलैंड की महारानी से मिलीं. वे बैंकाक से रंगून पहुँची. यहीं पर उनकी भेंट मानवती आर्या से हुई, जो बाद में उनके साथ ही रेजीमेन्ट में कैप्टन के रूप में सक्रिय रहीं. रंगून में रहते हुए उन्होंने 15 जनवरी 1944 को एक नयी महिला रेजीमेन्ट की स्थापना की. उनकी निर्भिकता, कार्य करने की क्षमता-दक्षता और जुझारुपन को देखते हुए 30 मार्च को कमीशंड अफ़सर का पद मिला.

द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की करारी हार के बाद ब्रिटिश सेनाओं ने आजाद हिन्द फ़ौज के स्वतंत्रता सैनिकों की धरपकड़ शुरु की. सिंगापुर में पकड़े गए सैनिकों के साथ वे खुद भी थीं, गिरफ़्तार कर लिया गया. डा. लक्ष्मी शुरु से ही स्वाभिमानी रही है. अपने स्वाभिमान को गिरवी रखकर झुकना उन्होंने कभी सीखा ही नहीं था. अनेक दवाबों के बावजूद उनका स्वाभिमान बना रहा. इस बीच एक दुखांत खबर आयी कि नेताजी का प्लेन क्रैश हो गया,जिसमें उनकी मौत हो चुकी है, कि खबर पाकर उन्हें अपार दु:ख तो हुआ लेकिन वे विचलित नहीं हुईं. नेता जी के विशेश सहयोगी मेजर जनरल शाहनवाज कर्नल प्रेमकुमार सहगल तथा कर्नल गुरुबक्ष सिंह ढिल्लन पर लाल किले में देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया, लेकिन पण्डित जवाहरलाल नेहरू, भूलाभाई देसाई और कैलाशनाथ काटजू जैसे दिग्गज वकीलों की दलीलों के चलते तीनों जांबाजो को बरी करना पड़ा.

सन 1947 में कैप्टन लक्ष्मी ने लाहौर में कर्नल प्रेमकुमार से विवाह कर लिया और कानपुर आकर बस गईं. यहाँ आकर भी उनका मिशन रुका नहीं. वे मजदूरों, दलितों, पीड़ितों और वंचितों की सेवा करने में जुट गईं. वे शहरों और गाँवों में जाती और मरीजों की सेवा-सुश्रुषा करतीं और सांप्रदायिकता, अंधविश्वास, जातिवाद, जैसी घातल बिमारी को भी दूर करने का भरसक प्रयास करतीं रहीं.

1971 में वे मार्कसवादी कम्युनिस्ट पार्टी से राज्यसभा की सदस्य बनीं. वे अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति की संस्थापक सदस्य भी बनीं. भारत सरकार द्वारा उनके उल्लेखनीय सेवाओं के लिए "पद्मविभूषण" से सम्मानित किया गया. अपनी 88 वर्ष की उमर में वे वामपंथी दलों की ओर से श्री ए.पी.जी.अब्दुल कलाम के विरुद्ध राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ा.

अपनी शारीरिक कमजोरी के बावजूद वे अपने जीवन के अंतिम क्षणॊं तक गरीब और नि:सहाय मरीजों को अपनी सेवाएँ देती रहीं. वे नियमित रुप से सुबह साढ़े नौ बजे क्लिनिक पहुँच जातीं और दोपहर दो बजे तक का समय मरीजों की तीमारदारी में बितातीं. दिल का दौरा पड़ने के पन्द्रह घंटे पहले उन्होंने देह-दान और नेत्र-दान करने की घोषणा कर दी थी.

यह देश एक ऎसी अन्धेरी सुरंग से निकलकर आया है, जिसका कोई ओर-छोर ही नहीं था. फ़िर ये अंधेरे, कोई मामुली अन्धेरे भी नहीं थे. इन दमघोंटू और अन्धेरी सुरंगों से बाहर निकल आने की जद्दोजहद करने वाले कितने ही अनाम शहीदों ने अपने प्राणॊं की बाजी लगा दी. सदियों की अन्धेरी और अन्तहीन सुरंग में जो मशालें जलीं थीं उनका नाम राजा राममोहन राय, रवीन्द्रनाथ टैगोर, विवेकानंद, मोहनदास. जवाहरलाल, सुभाषचंद्र बोस......था. यह फ़ेहरिस्त काफ़ी लंबी है.

सुभाषचन्द्र बोस जी के साथ सहयोगी के रुप में, एक नाम जुड़ता है और वह नाम है कैप्टन लक्ष्मी सहगल का. वे स्वयं मशाल तो नहीं थीं, लेकिन एक मशाल को प्रज्जवलित करते रहने में उनका अथक योगदान रहा है. आज के इस जटिल और क्रूर समय में, जब हमारे इतिहास का विरुपण हो रहा हो, देश को भूल जाने की, उसके निर्माण में लगे ईंट-गारों को भूल जाने की बातें की जा रही हों, भ्रम फ़ैलाए जा रहे हों, कुचक्र चलाए जा रहे हों, ऎसे घिनौनी हरकतों को तुरंत रोका जाना चाहिए. आज वे हमारे बीच नहीं है. यदि हम उनके बतलाए मार्गों का अनुसरण कर सकें तो इन मकड़जालों को आसानी से समूल नष्ट किया जा सकता

हैं.

2

आदिवासियों के अनूठे तीज-त्योहार.(जंगल में मंगल)

तथाकथित सभ्य समाज से कोसों दूर, घने जंगलों के अँधेरे कोनों में, पर्वतों की गगनचुम्बी चोटियों पर, गहरी पथरीली खाइयों में, प्रकृति से सहचर्य में उन्मुक्त जीवन बिताते आदिवासियों की अपनी अनोखी दुनिया है. एक ऎसी अद्भुत दुनियां- जहाँ न छल-कपट है, न छिना-झपटी है, न ऊँच-नीच की दीवारें है और न ही बनावटीपन है और न ही विलासिता की चमक-धमक, एक ऎसी विस्मयकारी दुनिया जो आधुनिक संसार की सांस्कृतिक जगमगाहट से बेखर है, अनजान है, निवास करती है.

भारत में करीब तीन हजार की संख्याँ में विभिन्न जातियों और उप-जातियाँ निवास करती है. सभी का रहन-सहन,रीति-रिवास एवं परम्पराएं अपनी विशिष्ट विशेषताओं को दर्शाती है. कई जातियाँ (**)मसलन गोंड-भील-बैगा-भारिया आदि जंगलॊं मे अनादिकाल से निवास करती आ रही है. सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति जंगलो से होती है. इन जातियों की सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक एवं कुटुम्ब व्यवस्था की अपनी अलग पहचान रही है. इन लोंगो में वन-संरक्षण करने की प्रबल वृत्ति है. अतः वन एवं वन्य-जीवों से उतना ही प्राप्त करते हैं, जिससे उनका जीवन सुलभता से चल सके और आने वाली पीढ़ी को भी वन-स्थल धरोहर के रुप में सौप सकें. इन लोगों में वन संवर्धन,

वन्य जीवों एवं पालतू पशुओं का संरक्षण करने की प्रवृत्ति परम्परागत है. इस कौशल दक्षता एवं प्रखरता के फ़लस्वरुप आदिवासियों ने पहाड़ों, घाटियों एवं प्राकृतिक वातावरण को संतुलित बनाए रखा.

स्वतंत्रता से पूर्व समाज के विशिष्ट वर्ग एवं राजा-महाराजा भी इन आदिवासी क्षेत्र से छॆड़-छाड़ नहीं किया करते थे. लेकिन अग्रेजों ने आदिवासी क्षेत्रों की परम्परागत व्यवस्था को तहस-नहस कर डाला, क्योंकि यूरोपीय देशों में स्थापित उद्दोगों के लिए वन एवं वन्य-जीवों पर कहर ढा दिया. जब तक आदिवासी क्षेत्रों के प्राकृतिक वातावरण में सेंध नहीं लगी थी, तब तक हमारी आरण्यक-संस्कृति बरकरार बनी रही. आधुनिक भौतिकवादी समाज ने भी कम कहर नहीं ढाया. इनकी उपस्थिति से उनके परम्परागत मूल्यों एवं सांस्कृतिक मूल्यों का जमकर ह्रास हुआ है. साफ़-सुथरी हवा में विचरने वाले, जंगल में मंगल मनाने वाले इन भॊले भाले आदिवासियों का जीवन में जहर सा घुल गया है. आज इन आदिवासियों को पिछड़ेपन, अशिक्षा,गरीबी,बेकारी एवं वन-विनाशक के प्रतीक के रुप में देखा जाने लगा है. उनकी आदिम संस्कृति एवं अस्मिता को चालाक और लालची उद्दोगपति खुले आम लूट रहे हैं. जंगल का राजा अथवा राजकुमार कहलाने वाला यह आदिवासीजन आज दिहाड़ी मजदूर के रुप में काम करता दिखलायी देता है. चंद सिक्कों में इनके श्रम-मूल्य की खरीद-फ़रोख्त की जाती है और इन्हीं से जंगल के पेड़ों और जंगली पशु-पक्षियों को मारने के लिए अगुआ बनाया जाता है. इन्होंने सपने में भी कल्पना नहीं की होगी की पीढ़ी दर पीढ़ी जिन जंगलों में वे रह रहे थे, उनके सारे अधिकारों को ग्रहण लग जाएगा. विलायती हुकूमत ने सबसे पहले उनके अधिकारों पर प्रहार किया और नियम प्रतिपादित किया कि वनों की सारी जिम्मेदारी और कब्जा सरकार की रहेगी और यह परम्परा आज भी बाकायदा चली आ रही है.

वे परम्परागत तरीके से खेती करते है. वे उन पेड़ों कॊ नहीं जलाते है, जिसके फ़लों की उपयोगिता है. महुआ का पॆड़ इनके लिए किसी कल्पवृक्ष" से कम नहीं है. जब इन पर फ़ल पकते हैं तो वे इनका संग्रह करते हैं और पूरे साल इनसे बनी रोटी खाते है. इन्हीं फ़लों को सड़ाकर वे उनकी शराब भी बनाते हैं. शराब की एक घूंट इनमें जंगल में रहने का हौसला बढ़ाती है.

आदिवासियों के मेलों तथा त्योहारों का अपना एक अलग ही आनन्द है. मेलों के अलावा आदिवासियों के कठोर जीवन में कौन रस घोल सकता है? उनके लिए यही तो एक ऎसा आकर्षण है, जिसे आदिवासी वर्ष भर एक अनोखी गुदगुदी की भाँति अपने हृदय में सँजोये रखते है. बात-बात पर उनके गीत गूँजते हैं और पाँव थिरकने लगते हैं. ढोल-नगाड़ों की बजने भर की देरी रहती है. जैसे ही इनकी स्वर-लहरी हवा के पीठ पर सवार होकर बस्ती तक पहुँचती है, ये फ़ौरन बिना समय गवाएं इकठ्ठा हो जाते हैं. स्त्री-पुरुषों के टोलियाँ मिलकर झूमती है और नृत्यों में खो जाती है. फ़िर सलफ़ी भी सिर चढ़कर बोलती है. मजाल है कि माहौल बिगड़ जाए या फ़िर किसी के साथ बत्तमीजी हो जाए. सब कुछ अनुशासन के तहत चलता रहता है, जब तक पाँव न थक जाये. इन भोलेनाथों की दुनिया देखकर लगता है जैसे त्योहार और मेले ही इनकी आबादियों को आज तक जीवन देते रहे हैं, इनमें रस घोलते रहे है

इन आदिवासियों के अपने कुछ खास त्योहार हैं,जिनके बारे में हम संक्षिप्त में जानकारी लेते चलें.

मेघनाथ की धूम- गोंडों में एक पर्व "मेघनाथ" मनाया जाता है. इस अवसर पर मेला भी लगता है. यह पर्व आमतौर पर फ़ाल्गुन मास के आरम्भ में होता है. अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग तिथियों को मनाया जाता है, जिसमें विभिन्न गाँवों के लोग इकठ्ठा हो सके. **मेघनाथ** आदिवासियों का सबसे बड़ा देवता माना जाता है. एक खुले मैदान में चार खम्बे गाड़े जाते हैं. इनके बीचो-बीच सबसे ऊँचा पाँचवा खम्बा गाड़ा जाता है और उसके ऊपर एक खम्बा इस तरह बांधा जाता है कि वह चारों ओर घूम सके. चारों खम्बों में से दो के बीच लकड़ियां बांधकर सीढ़ियाँ बना दी जाती है. इसे मुर्गी के पंखों, रंगीन कपड़ों के टुकड़ों आदि से सजाया जाता है. इस अवसर पर खण्डारा देव का आव्हान किया जाता है और उसकी विधि-विधान से पूजा-अर्चना की जाती है. इनका अपना अटूट विश्वास है कि खण्ड़ारा बाबा की पूजा करने से गाँव में कोई विपत्ति वगैरह नहीं आती और न ही बीमारी का प्रकोप हो सकता है. यदि कोई भारी मुसीबत होती है तो लोग मेघनाथ पर चक्कर लगाने का व्रत करते हैं. इसमें मान्यता मानने वाले व्यक्ति को मेघनाथ के ऊपर बंधी लकड़ी पर पीठ के सहारे बांध दिया जाता है. ऊपर खड़ा एक आदमी घूमने वाले खम्बे को संभालता है और ऊपर बंधे हुए आदमी को जोर-जोर से घुमाता है. इस अवसर पर जमकर ढोल बजते हैं और गीत गाए जाते हैं.

भीलों के त्योहार- राजस्थान के भील-आदिवासियों के अधिकांश रीति-रिवाज, उत्सव एवं त्योहार बड़ी ही रोचक और विचित्र होते है. ये लोग त्योहारों और उत्सवों के दिन को शुभ कानकर अपने जीविकोपार्जन के लिए धन्धा प्रारम्भ करते हैं. अन्य हिन्दुओं की भांति ही ये गणगौर, रक्षाबन्धन, दशहरा, दीपावली एवं होली आदि त्योहार मनाते हैं, लेकिन इनके मनाने का ढंग कुछ अनूठा एवं निराला होता है.

आवल्यां ग्यारस (फ़ाल्गुन शुक्ल एकादशी) को भील समाज मुख्य त्योहार के रूप में मनाते हैं. मस्ती में मस्त होकर आंवले के फ़ूल अपनी पगड़ियों में तुर्रे की तरह लगाकर, जंगली फ़ूलों की मालाएं पहनकर तथा मण्डलियां बनाकर नृत्य और गान करते हुए आस-पास के गांवों में मेले के रूप में एकत्र होते हैं इसी दिन को शकुन मानकर ये जंगलों से लकड़ियां काटकर बेचने का धन्धा प्रारम्भ करते हैं.

होली पर्व को भी ये बड़े ही विचित्र ढंग से मनाते हैं. भील महिलाएं नाचती-गाती आगुन्तकों का रास्ता रोक लेती हैं और जब तक उन्हें गुड़ या नारियल नहीं मिल जाता, तब तक ये रास्ता रोके रखती हैं. होलीदहन के पश्चात हाथ में छड़ियां लिए रंग-बिरंगी पोशाकें पहने ये लोग "गैर"(एक प्रकार का नृत्य) खेलना प्राराम्भ कर देते हैं. ढोल, मादल बज उठते हैं. थाली को भी ये वाद्द्य-यंत्र की तरह बजाते है. इनकी मिली-जुली स्वर-लहरी में पांव थिरकने लगते हैं. पांवों में बंधे घुंघुरुओं के स्वर भी इनमें आ मिलते है. ये मदमस्त होकर तब तक नाचते, खुशी मनाते हैं जब तक जी न भर जाए. इस नृत्य श्रृंखला में औरते भाग नहीं लेतीं.

होली के तीसरे दिन "नेजा" नामक नृत्य बड़े ही कलात्मक एवं अनूठे ढंग से किया जाता है. एल खम्भे पर नारियल लटकाकर आदिवासी महिलाएँ उसके चारों ओर हाथ में छड़ियाँ तथा बटदार कोड़े लिए नृत्य करती हैं और जैसे ही पुरुष नाचते-कूदते उस नारियल को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, महिलाएं उन्हें छड़ियों एवं कोड़ों से मारती हुई भगा देती हैं. इस अनूठे नृत्य की शैली को देखकर बरबस ही व्रज-मण्डल की होली की याद हो आती है.

चैत्रमास में गणगौर का मुख त्योहार अन्य लोगों के भांति ही आदिवासी मनाते हैं. आबू और सिरोही के पहाड़ों और जंगलों के बीच ये आदिवासी जन गिरसिये नृत्य और गान करते हुए गणगौर की काष्ट मूर्ति को लेकर आस-पास के गाँवों में घूमते हैं. सावन और भादों में ये भील अपने घरों को छोडकर गाँवों के बाहर चले जाते हैं और जगह-जगह अपने इष्टदेव की पूज़ा कर गौरीनृत्य प्रारंभ करते हैं. देवों के देव महादेव को ये विशेष स्थान देते हैं. इनका यह कलात्मक और अनूठा नृत्य भगवान शिव के जीवन पर आधारित होता है. भगवान भैरव के प्रति धार्मिक कर्तव्य सम्पन्न करने के लिए इस नृत्य में सैंकड़ों की संख्या में भाग लेते हैं.

दीप पर्व पर ये बड़े उल्ल्हास एवं उमंग के साथ मनते है. धन के नाम पर इनके पास पशु-धन ही होता है. यही इनकी लेक्षमी भी है. इस दिन वे अपने पशुओं की ललाट पर कुंकुम का टीका लगाकर आरती उतारते हैं. दूसरे दिन पशुओं को गेरु से रंगकर उनका श्रृंगार करते हैं. प्रारंभ में वे **खेतरपाल** यानि खेत के प्रहरी देवता की पूजा करते हैं. खेत के किसी ऊँचें पत्थर पर सिन्दूर डालकर, नीबू काटकर एवं नारियल फ़ोड़कर, दीप जलाकर अर्चना करते हैं. किसी सत्य-चरित्र व्यक्ति या लोकप्रिय आदिवासी की असामयिक मृत्यु होने पर उसका प्रस्तर-स्मारक बनाकर त्योहारों पर उसकी याद करते हुए अर्चना करते हैं. इसे “**गाता-पूजा”** कहा जाता है. इस अवसर पर वे स्नेह-सम्मेलन का भी आयोजन करते हैं. एक-दूसरे को गले लगाकर शुभ कामनाएं देना नहीं भूलते. इसे “**मेर-मेरिया**” का त्योहार भी कहते हैं.

बाणेश्वर बाबा- डूंगरपुर जिले की असपुर तहसील के नवातपुरा ग्राम से करीब डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर माही नदी एवं सोम नदियों के बीच लिंगाकार बाणेश्वर महादेव के मन्दिर पर माघ शुक्ल एकादसी से पूर्णिमा तक आदिवासियों का महत्त्वपूर्ण मेला लगता है. आदिवासी महिलाएं मिलकर सुरीली आवाज में " **नाथी बैणासरियो मेलो नाथी घीरी रीजे ए**" अर्थात-*बाणेश्वर बाबा से दूजा कोई बाबा नहीं, बाणासर मेले से दूजा कोई मेला नहीं,* गाती हुए मीलों दूर से पद-यात्रा करती हुई सैंकड़ों की तादात में भाग लेती हैं. पुरुष अपने पुरखों की अस्थियाँ इसी अवसर पर माही के पवित्र जल में प्रवाहित करते हैं.

होली के ठीक बाद मनाया जाने वाला "भगोरिया पर्व" भील आदिवासी बड़े उल्ल्हास और उमंग के साथ मनाते हैं. पूरे गांव के लोग यहाँ एकत्रित होते हैं. ढोल-ढमाके-टिमकी की आवाज पर इनके पाँव थिरकने लगते हैं. होंठों पर गीत सजने लगते हैं. बीच-बीच में अबीर-गुलाल भी उड़ने लगता है. इनका उत्साह और उमंग देखने लायक होता है.

भारत के सुदूर पूर्व बिहार, मध्यप्रदेश तथा उड़ीसा के रहवासी **संथाल आदिवासियों** की अपनी एक अजीबोगरीब दुनिया है. इनका प्रसिद्ध त्योहार "**सोहाराय"** है. यह त्योहार प्रायः जनवरी महिने में पांच दिन तक चलने वाला त्योहार है. घरों की उचित साफ़-सफ़ाई के बाद वे एक जगह इकठ्ठा होकर इसे मनाते है. जेहर तथा गोधन का आव्हान करते हुए वे विभिन्न स्थानों पर अंडे रखते है. चरवाहों का अपना विश्वास है कि यदि गाय के पैर अण्डों पर पड़ जाए या वह उसे सूंघ ले, तो वह उनके लिए सौभाग्य-वर्धक होगा. तत्पश्चात गायों के पैर धुलाए जाते है.

दूसरे दिन दोपहर को सरभोज का कार्याक्रम होता है. गाँव की सभी कुँवारी बालिकाएँ सज-धजकर गांव के मुखिया के घर जाती है. वे वहाँ नाचती-गाती और गो-पूजन करती हैं. पशुओं के सींगों में सिन्दूर और तेल लगाती हैं. दूसरे दिन गाँव की सभी बहुएं अपने-अपने मायके चली जाती हैं. ऎसा रिवाज है. **"इरोक सीम"** नामक एक त्योहार और है, जो जून के महिने में मनाया जाता है. यह कृषि-पर्व है. **हरियर सिमको** जुलाई में मनाने जाने वाला त्योहार है. **दूरी शुण्डली ननवानी** भी फ़सलों का त्योहार है, जो अगस्त माह में मनाया जाता है. **करम परब** माह सितम्बर-अक्टूबर में मनाया जाता है. इस दिन करम पेड़ की डाली काटकर गाँव की गली में गाड़कर इसके चारों ओर नाचते हैं. **मोकोर त्योहार** हिन्दुओं की मकर-संक्रान्ति जैसा ही लगता है, क्योंकि इसे मकर-संक्रान्ति के दिन मनाया जाता है. इस दिन संथाल अपने पूर्वजों के नाम चूड़ा और शक्कर चढ़ाते हैं. **माघा सीम त्योहार** जनवरी के अन्त या फ़रवरी के शुरु में मनाए जाने का प्रचलन है. इस पर्व से संथालों का नया वर्ष आरम्भ होता है.

वाहा या वसन्त- वाहा फ़रवरी के अंत में मनाए जाने वाला त्योहार है. इस दिन ये लोग वसन्त के नए फ़ूल एवं पत्तों का उपयोग वाहा मनाने के बाद ही करते हैं. देवी-देवताओं को धूप, दीप, सिन्दूर एवं घास के अतिरिक्त हंडिया, महुए तथा सरकुए के फ़ूलों की भेंट चढ़ाई जाती है. जेहर स्थान पर खिचड़ी पकाकर इसका प्रसाद वितरत किया जाता है. लोग बैर-भाव त्यागकर हंसी-खुशी से एक दूसरे को गले से लगाते हैं. मंगलमय शुभकामनाएं देते है. और दिन ढलते ही मंडली सजने लगती है. ढोल-ढमाके-टिमकी बजने लगती हैं, गीत गाए जाते हैं और जमकर नाच चलता रहता है.

फ़ूलों का त्योहार-"सरहोल"- आदिवासियों का यह बड़ा ही रोचक तथा मधुरतम त्योहार है. सदियों पूर्व से मनाये जाने वाला त्योहार है, फ़ूलों का त्योहार यानी वसन्तोत्सव. इस दिन का ये बड़ी बेसब्री से इंतजार करते है. इसे होली की भाँति मनाने की प्रथा है.

वा पर्व- वा का मतलब "फ़ूल" होता है. मुण्डा आदिवासी इस त्योहार को चैत्र मास में मनाते हैं. इस अवसर पर वनदेवी को शाल-पुष्प से प्रसन्न किया जाता है. फ़ूल, फ़ल, सिन्दूर, अक्षत आदि देवता को चढ़ाये जाते हैं. एक बात यहाँ विशेष रुप से उल्लेखनीय है कि जब तक मुण्डा फ़ूलों का पर्व नहीं मना लेता, तबतक घर का मुखिया नये फ़ूल-फ़ल का सेवन नहीं करता.

उराँवों में यह पर्व चैत्र शुक्ल की पंचमी को मनाया जाता है. इस अवसर पर विवाहिता लड़कियाँ भी अपने मायके से बुला ली जाती है. इनकी मान्यता है कि खेती सर्वप्रथम इसी पर्व को मनाकर शुरू की गई थी. आज भी ये लोग उस पर्व को मनाये बिना अपने खेतों में खाद तक नहीं डालते. सूरज और धरती की खुशहाली भी इस त्योहार का प्रतीक है.

करम पर्व - मध्यप्रदेश और बिहार के उराँवों के लिए करम पर्व विशेष महत्व का है. इस त्योहार को लेकर एक कथा प्रचलित है. कहते हैं करमा और धरमा नाम के दो भाई थे. व्यापार करने के लिए करमा विदेश चला गया. काफ़ी समय बीतने के बाद भी जब वह वापिस नहीं आया तो दूसरे भाई धरमा ने करम वृक्षा की डाल काटकर आँगन में गाड़ दी और उसकी पूजा-अर्चना की. इस पूजा के फ़लस्वरुप उसका भाई वापिस आ गया. अपने भाई से मिलकर वह बहुत खुश हुआ लेकिन आँगन में गड़ी करमा की डाली को उसने झाड-झखांड़ समझकर कूड़ेदान में फ़ेंक दिया. यह सीधे-सीधे करम-वृक्षा का अपमान था. उन्हें इस कुकृत्य के लिए काफ़ी तकलीफ़ें झेलनी पड़ी. कारण समझ में आया तो उसने पुनः उस डाल को उठाकर पूजा-अर्चना की. इस तरह उनका खोया हुआ सुख वापिस मिल गया. आज भी उराँव जाति के लोग करमवृक्ष की टहनियों की पूजा करते है. उनका विश्वास हे कि ऎसा करने से सुख-समृद्धि बनी रहेगी.

मध्यप्रदेश के कोरकू आदिवासी कार्तिक मास में दीपावली का पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाते हैं वे पशुगृह "बाल्दया" की सफ़ाई करते हैं. पशुओं की पूजा करते हैं और लोहे के गर्म औजार से उन्हें दागते है. उनका अपना विश्वास है ऎसा करने से पशुओं में बीमारी नहीं आती

बोडो आदिवासी बड़े बीहड़ इलाकों में रहते हैं. वे इतने उग्र, भयंकर तथा प्रचण्ड होते हैं कि उनके पर्वों पर बाहर का कोई भी व्यक्ति उनके गाँव की सीमा में सरलता से प्रवेश नहीं पा सकता. यदि कोई जानबूझकर प्रवेश करने की कोशिश करता है तो समझिए उसकी खैर नहीं. वैसे तो वे स्वयं कँटिली झाड़ियों से बाहरी लोगों का रास्ता बंद कर देते हैं. उनका अपना मानना है कि बाहरी आदमी के प्रवेश से गाँव में दैवी संक्रमण हो जाता है और खेतों की उर्वरता दूसरे गाँव की भूमि में चली जाती है.

उत्तर प्रदेश के जौनसार-बाबर इलाके में माघ मास में जगह-जगह मेले लगाते हैं. यहाँ के मेले रंग-बिरंगे होते हैं. आदिवासियों की पोशाक देखकर ऎसा लगता है जैसे रंग-बिरंगे पुष्प किसी एक गुलदस्ते में सजा दिए गए हों.

खाईं जौनपुर में वैसाख तथा आषाढ़ में पृथक-पृथक पर्व मनाए जाते हैं. दखन्यौड़ पर्व में पशु-पूजा की जाती है. भाद्रपद में जन्माष्टमी, माघ में माधी और फ़ाल्गुन में शिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है.

इस प्रकार आदिवासियों के लोकोत्सव एवं त्योहार अपनी-अपनी संस्कृति एवं रीति-रिवाजों को उजागर करते हैं और विविधता में एकता का संदेश प्रसारित करते हैं.

---

3 **सिंहस्त 2016**

सिंहस्थ-२०१६. **(२२ अप्रैल से २१ मई २०१६)**

कुम्भपर्व एक महत्त्वपूर्ण और सार्वभौम महापर्व माना जाता है, जिसमें देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु एकत्र होते हैं. इसे यदि विराट मेला कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी. विश्व में शायद ही ऎसे विराट मेले का आयोजन कहीं भी नहीं होता, यही तो इसकी विशेषता है. “कुम्भ” का शाब्दिक अर्थ है घट या घड़ा. कुम्भ के एक अर्थ विश्वब्रह्माण्ड भी है. जहाँ पर विश्व भर के धर्म, जाति, भाषा तथा संस्कृति आदि का एकत्र समावेश हो वही कुम्भमेला है. कुम्भ मेले का प्रारंभ कब से हुआ इसका ठीक-ठीक निर्णय करना कठिन है. परन्तु कुम्भपर्व के विषय में पुराणॊं में एक प्रसंग ऎसा आया हुआ है, जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि कुम्भ मेले का प्रारंभ बहुत प्राचीन काल में ही हो चुका था. आज केवल उसकी आवृत्तिमात्र होती है.

कुम्भ पर्व को लेकर एक बड़ा ही रोचक प्रसंग पढ़ने को मिलता है –

किसी समय भगवान विष्णु के निर्देशानुसार देवों और दानवों ने मिलकर समुद्र-मंथन किया. मंदराचल पर्वत को मन्थनदण्ड और वासुकि नाग को नेती (मन्थन-रज्जु) बनाकर समुद्र-मंथन किया. मंथन करने से चौदह रत्न निकले, जो इस प्रकार हैं **(१) ऎरावत हाथी.(२) कल्पवृक्ष (३) कौस्तुभमणि (४) उच्चैःश्रवा (५) चन्द्रमा (६) धनुष (७) धेनु (कामधेनु), (८) रम्भा (९) लक्ष्मी (१०) वारुणी (११) विष (१२) शंख (१३) धन्वन्तरि और (१४) अमृत.**

धन्वन्तरि अमृतकुम्भ लेकर निकले ही थे कि देवों के संकेत से देवराज इन्द्र के पुत्र जयन्त अमृत-कुम्भ को लेकर वहाँ से भाग निकले. दैत्यगुरु शुक्राचार्य के आदेशानुसार दैत्यों ने अमृत-कलश छीनने के लिए जयन्त का पीछा किया. जयन्त और अमृत-कलश की रक्षा के लिए देवगण भी दौड़ पड़े. आकाशमार्ग में ही दैत्यों ने जयन्त को जाकर घेर लिया. तब तक देवगण भी वहाँ पहुँच चुके थे. फ़िर क्या था, देखते ही देखते दोनों में युद्ध छिड़ गया जो बारह दिन तक चलता रहा. दोनों दलों के संघर्ष-काल में अमृतकलश से पृथ्वी पर चार स्थानों पर अमृत की बूंदें छलककर गिर गयी. उस समय सूर्य आदि देवता जयन्त और अमृतकलश की रक्षा के लिए सहायता कर रहे थे. देवों तथा असुरों के कलह को शांत करने के लिए भगवान विष्णु मोहिनीरूप धारणकर प्रकट हुए तो युद्ध तत्काल थम गया और दोनों पक्षों ने तय कि अमृत पिलाने का भार इन्हीं पर छॊड़ दिया जाए. तब मोहिनीरूपधारी विष्णु ने दैत्यों को अमृत का भाग न देकर देवताओं को पिला दिया. इसलिए देवगण अमर हो गए.

अमृत प्राप्ति के लिए बारह दिनों तक देवों और दानवों में युद्ध हुआ था. देवों के बारह दिन मनुष्यों के लिए बारह वर्ष के बराबर होते हैं. इस कारण कुम्भ मेला भी बारह वर्ष के बाद एक स्थान पर होता आया है. जिन स्थानों पर अमृत की बूंदें गिरी थी वे स्थान हैं (१) हरिद्वार (२) प्रयागराज (३) नासिक और (४) उज्जैन. इसीलिए इन चार स्थानों में बारह वर्षों के बाद कुम्भ मेला लगता है, जो ढाई महिने तक चलता है. इसे पूर्ण कुम्भ कहा जाता है. हरिद्वार और प्रयाग में छः साल के पश्चात अर्धकुम्भ का मेला भी आयोजित होता है. हरिद्वार के अर्धकुम्भ के अवसर पर नासिक का कुम्भ मेला होता है और प्रयाग के अर्धकुम्भ के समय उज्जैन का कुम्भ होता है.

(१) हरिद्वार- कुम्भराशि पर बृहस्पति का और मेष-राशि पर सूर्य का योग होने पर हरिद्वार में पूर्ण कुम्भ का अयोजन होता है.
(२) प्रयाग- वृषराशि पर बृहस्पति का योग होने पर प्रयाग में पूर्णकुम्भ मेले का आयोजन होता है.
(३) उज्जैन- सिंहराशि पर बृहस्पति का और मेष राशि पर सूर्य का योग होने पर उज्जैन में पूर्णकुम्भ मेले का आयोजन होता है.
(४) सिंहस्थ महापर्व दस महायोगों के उपस्थित होने पर मनाया जाता है. जिन दस महायोगों का उल्लेख शास्त्रों में उल्लेखित किये गए हैं वे इस प्रकार हैं-(१) सिंह राशि में बृहस्पति, (२) मेष राशि में सूर्य (३) तुला राशि में चन्द्र (४) स्वाती नक्षत्र (५) वैशाख मास (६) शुक्ल पक्ष (७) पूर्णिमा तिथि (८) व्यातिपात योग (९) सोमवार और (१०) अवंतीपुरी(उज्जैन.). नासिक- वृश्चिकराशि पर बृहस्पति का योग होने पर नासिक में पूर्ण कुम्भ का योग होता है, जहाँ कुम्भ का मेला लगता है.
इस प्रकार चारों स्थानों में बारह वर्ष के पश्चात एक महाकुम्भ पर्व होता है. कुम्भ मेलों का महत्व बतलाते हुए कहा गया है.

अश्वमेघसहस्राणि वाजपेयशतानि च * लाक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नाने तत्फ़लम

अर्थात- हजार अश्वमेघयज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फ़ल मिलता है, वही फ़ल कुम्भस्नान से प्राप्त हो जाता है.

कुम्भपर्व में जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, राज्य, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, वेषभूषा आदि सभी संदर्भों में अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं. साधु-संत, धनी, विद्वान, कर्मकांडी, योगी, ज्ञानी, कथा वाचक, तत्वदर्शी, सिद्धपुरुष, सेठ-साहूकार, भिखारी, व्यापारी, गृहस्थ, सन्यासी, ब्रह्मचारी, कल्पवासी, अधिकारी, बूढ़े, जवान, आबालवृद्धवनिता सभी का वहाँ समागम होता है. विभिन्न धर्म, संस्कृति तथा सम्प्रदायों का संगम इन कुम्भ मेलें में होता है, जो सहज आकर्षण का केन्द्र होता है. यही कारण है कि उत्तरभारत के लोग दक्षिण भारत में तिरुपति, रामेश्वर तथा कन्याकुमारी आदि तीर्थस्थानों पर जाकर अपने को कृतार्थ मानते हैं और दक्षिण भारत के लोग उत्तर भारत स्थित बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, जगन्नाथपुरी, काशी तथा प्रयाग आदि तीर्थस्थानों की यात्रा कर अपने को धन्य मानते हैं.

यह बात स्वयं सिद्ध होती है कि हमारे प्राचीन काल के ऋषि-मुनि नितान्त ही दूरदर्शी तथा कुशाग्रबुद्धि के थे. उन्होंने भारतवर्ष के प्राचीन वैदिक सनातन धर्म. संस्कृति, सभ्यता, व्रत, पर्व, त्योहार, साधना तथा उपासना आदि की रक्षा के लिए एवं इस आर्यावर्त देश की एकता, अखण्डता और गौरव-गरिमा को बनाए रखने के लिए इनकी स्थापना की थी.

यह गौरव की बात है कि इस समय महाकुम्भ सिंहस्थ उज्जैन में (२२ अप्रैल से २१ मई २०१६) विश्व का इतना बड़ा और महत्त्वपूर्ण आयोजन मध्यप्रदेश की धरा पर हो रहा है. यहाँ आए हुए संतों-सन्यासियों के अखाड़े अपनी साधना और विद्वत्ता से कोटि-कोटि श्र्द्धालुओं को लाभान्वित कर रहे हैं. साधु-संत अपनी ओजस्वी और दिव्य वाणी से परमोंधर्म का पाठ पढ़ा रहे हैं. प्रवचन, कीर्तन, भजन, पूजा-पाठ आदि धर्म से जुड़ा शायद ही ऎसा कोई धार्मिक कार्य है, जो यहाँ न हो रहा हो.

इस महाकुंभ तक पहुंचाने के लिए शासन की ओर से बड़े पैमाने पर इंतजामात किए गए हैं. जगह-जगह यात्रियों के ठहरने और मेले तक पहुंचाने के निःशुल्क बसें उपलब्ध होती है. पीने के लिए शुद्ध जल, शौचालय के लिए, बिमार पड़ जाने की स्थिति में मेडिकल की

व्यवस्था, स्नान घाट पर फ़्लड लाईट की उत्तम व्यवस्था, सुगंधित जल के छिड़काव ,नदी में शुद्ध जल ही प्रवाहित हो, नदी में गोताखोरों की टीम, इस पार को उस पार से जोड़ने के लिए फ़ौज द्वारा निर्मित दो पुल, पुलिस की उत्तम व्यवस्था आदि यहां देखने को मिलती है. इसके अलावा रेल विभाग ने भी इस व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपनी ओर से व्यवस्थाएं की है.

मित्रों-

उज्जैन जाने के कई अवसर मुझे मिले लेकिन कुंभ में जाने का यह प्रथम अवसर था. एक दिन यूंहि मित्रों के बीच कुंभ में जाने की बात चल निकली. सहमति बनते ही मित्र बी,एल.विश्वकर्मा ने पेंचव्हेली फ़ास्ट पैसेंजर से आरक्षण करवा लिया. इस तरह छिन्दवाड़ा से श्री डा.संतोष नाग, अशोक सक्सेना, के.के.डेहरिया, बी.एन.विश्वकर्मा, राकेश चौबे, एस.एल.पाठेकर, के.एस.माल्या और ए.पी.खंगारे सहित हम १४ मई को उज्जैन के लिए निकले. ट्रेन का नाम भले ही फ़ास्ट पैसेंजर हो लेकिन वह अपनी ही चाल में चलती है. उसे नाम के अनुरुप चलना शायद नहीं आता. अपनी सामान्य चाल में चलते हुए ट्रेन मक्सी जंक्शन दो बजे के करीब पहुंची. अब हमें दूसरी ट्रेन का इन्तजार था. सूरज महाराज के तेवर काफ़ी गर्म थे. किसी तरह अपने आपको धूप से बचते हुए हम अगली ट्रेन का इन्तजार करने लगे. काफ़ी इन्तजार के बाद जब ट्रेन नहीं आयी तो हमें प्रायवेट बस से उज्जैन जाने का निर्णय लिया. किसी तरह उज्जैन पहुंचे. शाम घिर आयी थी और हमें रामघाट के पास अवस्थित रामानुजकोट पहुंचना था,लेकिन किसी भी वाहन को मेला क्षेत्र में घुसने के सक्त मनाही थी. किसी तरह एक लाज में रुकने का इन्तजाम किया और रात्रि में ही क्षिप्रा में स्नान करने का मानस बनाया. रास्ता चलते हम क्षिप्रा के तट पर पहुंचे. चारों तरह अपार भीड़ को देखने का हमारा यह पहला अवसर था. देश के कोने-कोने से लाखों श्रद्धालुओं का आगमन आश्चर्य पैदा कर रहा था. आश्चर्य तो इस बात पर भी होता है कि अन्यान्य स्थानों में होने वाले कुंभ का आमंत्रण किसी को नहीं भेजा जाता. इसके आयोजन की खबर पंचागों के अलावा समाचार-पत्रों में हे पढ़ने को मिलती है. बिना किसी आमंत्रण के लाखों-करोड़ों श्रद्धालुओं का आना इस बात की पुष्टि के लिए काफ़ी है जो भारत की विविधता और एकता को दर्शाती है. म.प्र.शासन की ओर से बड़े पैमाने पर किए गए सुरक्षा के इन्तेजामों को देखकर तारीफ़ की जानी चाहिए. जगह-जगह पुलिसमैन तैनात थे. व्हिल्सिंग देते हुए वे भीड़ को आगे बढ़ने का संकेत दे रहे थे. आश्चर्य इस बात पर कि किसी भी पुलिसमैन को हमने तैश में बातचीत करते नहीं देखा. इतनी सज्जनता..नम्रता आदि देखकर आश्चर्य पैदा करने के लिए काफ़ी है अन्यथा बेचारों को बड़ा ही निर्मम-कठोर और अत्याचारी ही माना जाता है.

१६ मई को हम रामघाट के समीप स्थित रामानुजकोट जा पहुंचे. विश्वगीता प्रतिष्ठान का यह पावन केन्द्र समूचे देश के अलावा विश्व में गीता को प्रतिष्ठित करने के लिए भगीरथ प्रयास कर रहा है. इस केन्द्र में वेदपाठी बच्चों को संस्कारित किया जाता है. इस संस्थान के प्रमुख हैं स्वामी रंगनाथाचार्यजी. मंदिर परिसर में भक्तों की भीड़ देखते ही बनती है. भक्तों के लिए आवास तथा निःशुल्क भोजन की उत्तम व्यवस्था भी यहाँ की जाती है.

रामानुजकोट का प्रवेशद्वार   स्वामी रंगनाथाचार्य जी.रामानुजकोट   प्रवेशद्वार पर मित्रों के साथ   उत्तम भोजन व्यवस्था.

कुंभ मेले में प्रवेश करते ही हमें मुख्य द्वार पर एक विशालकाय सिंह के दर्शन होते हैं जो सिंहस्थ कुंभ होने का प्रमाण प्रस्तुत कर रहा होता है. इसी स्थान से होते हुए हम पावन क्षिप्रा के तट पर पहुँचे थे. दो दिन में तीन बार स्नान और महाकाल के दिव्य दर्शनों का पुण्य-लाभ हमने उठाया.

<u>सिंहस्थ 2016 के कुछ विहंगम दृष्य.</u>

आस्था एव् अध्यात्म का अनूठा संगम

समूची क्षिप्रा फ़्लड लाईट से जगमगा रही है. साधु-संतों के अस्थायी अखाड़ों हों अथवा मन्दिर, सभी रंग-बिरंगी रोशनी में जगमगा रहे है. लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ स्नान कर पुण्य लाभ ले रहे हैं. स्नान के लिए पर्याप्त शुद्ध जल उपलब्ध करवाया जा रहा है. पानी की शुद्धता के स्तर को दिखाने और तापमान को प्रदर्शित करने के लिए एक डिस्प्ले लगाया गया है, जो निरन्तर आंकड़े दिखला रहा है. स्नान और डुबकी लगाने के लिए पानी का स्तर चार फ़िट अर्थात 120 से.मी. रखा गया है. कोई श्रद्धालु पानी में न डूब जाए इसके लिए मोटरबोट और गोताखोर के पर्याप्त इंतजाम घाटों पर किए गए हैं. नदी का किनारों को सजाया-संवारा गया है. क्षिप्रा के बाएं किनारे पर लाल पुल से लेकर भूखी माता से लेकर दत्त अखाड़े तक एवं दाएं तट पर लाल पुल से लेकर नृसिंह घाट तक खाली जगहों पर भी घाटों का निर्माण किया गया है. इस तराह दोनों ओर लगभग 8 किमी.लम्बाई में घाट उपलब्ध है. लबालब बहने वाली

क्षिप्रा इस समय जलविहीन है. बिना जल के सिंहस्थ कैसा? जब जल नहीं होगा तो स्नान करना संभव नहीं. शासन ने इस संकट से निजाद पाने के लिए लगभग 19 किमी.लम्बाई में ग्राम पिपल्याराधौ से निकालकर खान नदी को पाइप के जरिए कालियादेह महल के आगे क्षिप्रा से जोड़ा दिया है. हजारों की संख्या में श्रद्धालु पानी में डुबकी लगाकर निकल रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर उतनी ही संख्या में लोग पानी में उतर रहे हैं. न कोई शोर, न कोई शराबा, सब इस ढंग से हो रहा मानो आप कोई दिवास्वपन देख रहे हों. है न आश्चर्य पैदा करने वाली बात ! इस माकूल इंतजाम के लिए शासन की जितनी भी तारीफ़ की जाय, कम ही प्रतीत होगी.

<u>सिंहस्थ बना सामाजिक सरोकारों का महाकुंभ</u>

दुनिया को मानवीय मूल्यों का संदेश देने के मामले में सिहंस्थ 2016 अतीत में हुए कुंभों से, एकदम हट कर अनूठा और नवेला बना. धर्म और अनुशासन का पाठ पढ़ाने वाले जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानंदजी गिरि महाराज, परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष और आध्यात्मिक गुरू स्वामी चिदानन्द सरस्वती ने उपस्थित जनसमुदाय को पर्यावरण और प्रकृति संरक्षण के साथ खुले में शौच नही करने का संदेश दिया. वहीं दूसरी ओर भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी होर्डिंग के जरिए जन-जन में संदेश देते नजर आए. होर्डिंग में लिखा गया था**- कितनी पावन हैं ये नदियां-चाहे गंगा हो या क्षिप्रा, खुले में शौच न करें.** इसके अलावा परमार्थ निकेतन द्वारा संदेश दिया गया कि क्षिप्रा के आंचल को हरियाली की चादर ओढ़ाने के लिए डेढ़ लाख पौधे रोपे जाएंगे जो पीढ़ियों के लिए महाप्रसाद बनेंगे. शनि के उपासक दाती महाराज ने बेटियाँ बचाओ का संदेश देते हुए जनजागरण किया. पूरे सिंहस्थ में बेटियां बचाने के होर्डिंग्स लगे हुए थे.

<u>कुंभ मेला तब से आज तक-</u>

संभवतः यह पहला कुंभ है जहाँ सिने जगत की प्रसिद्ध कलाकार, विश्व विख्यात नृत्यांगना एवं सासंद हेमामालिनी ने नाट्य विहार कला केन्द्र मुंबई के कलाकारों के साथ नृत्य वाटिका राधा रास बिहारी की प्रस्तुति दी तो पूरा माहौल राधा-कृष्ण भक्ति में रम गया. पांच मई को अचानक आए तूफ़ान में कई पंडाल धराशायी हो गए. मुख्य मंत्री शिवराज चौहान प्रोटोकाल को न देखते हुए मंगलनाथ जा पहुचे और व्यवस्था बनाने में जुट पड़े. फ़िर क्या था जन-समुदाय उमड़ पड़ा और सहयोग देने में जुट गया. इसी दिन पेशवाई के बाद जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्दजी ने नाराज होकर पंडाल छोड़ दिया और वैशाली नगर स्थित एक यजमान के यहां रुकने पहुंच गए. हादसा गुजर गया..फ़िर नयी सुबह हुई. उसी उमंग और उत्साह के साथ लगभग दस लाख लोगों ने रामघाट, दत्त अखाड़ा मंगलनाथ, त्रिवेणी समेट अन्य घाटों पर स्नान कर पुण्य-लाभ उठाया. भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने बुधवार को वाल्मिकि घाट पर क्षिप्रा में डुबकी लगाई और दीनदयालपुरम के संत समागम में शामिल हुए. संतों के पैर छुए और आशीर्वाद लिया. महाकाल के दर्शन किए और उज्जैन से 15 किमी. दूर ग्राम निनौरा में 12 से 14 तक अंतरराष्ट्रीय वैचारिक महाकुंभ पहुंचकर तैयारियों का जायजा लिया और राज्य सरकार की प्रदर्शनी का शुभारंभ किया. 11 मई को तलवार लहराते, सिक्के बांटते किन्नर अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी घोड़े पर सवार होकर निकले. एक पालकी में आद्ध्य शंकराचार्य की तस्वीर और किन्नरों की आराध्य देवी बहुचरा माता की मूर्ति थी. निनौरा में सिंहस्थ का सार्वभौमिक संदेश तैयार करने के लिए हो रहे अंतरराष्ट्रीय विचार कुंभ में कुटीर उद्धोगों को प्रोत्साहित करने, जल-जंगल और जमीन बचाने और मछली पालन, कृषि पद्दति में परिवर्तन करने, नारी-शक्ति को नयी दिशा देने, स्वच्छता एवं पवित्रता की महत्ता एवं परंपरा को स्थपित करने पर जोर दिया गया. 14 मई दिन शनिवार को देश के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उपस्थित होकर त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय विचार कुंभ के समापन कार्यक्रम में सिंहस्थ के सर्वमौम संदेश को विश्व के लिए जारी किया. इस दौरान श्रीलंका के राष्ट्रपति श्री मैत्रीपल सिरिसेना, लोकसभा अद्ध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन, मुख्यमंत्री श्री शिवराज चौहान, केन्द्रीय इस्पात और खान मंत्री नर्रेद्रसिंह तोमर और सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री थावरचंद गहलोत के अलावा 850 से अधिक विदेश के विद्वानों ने सहभागिता का निर्वहन किया. उन्होंने साधु-संतो को आव्हान करते हुए साल में एक बार सात दिन भक्तों के बीच समाज के मुद्दों पर चर्चा करने, पेड़ और नदी,प्रकृति-पर्यावरण, बेटी व नारी, धर्म और विज्ञान पर गहनता से चर्चा कर आगे की रणनीति बनाने पर जोर दिया. उन्होंने मंच से ग्लोबल वार्मिंग, आतंकवाद और विस्तारवाद को तीन बड़े संकट बताते हुए उसका निदान खोजने की अपील की. इसी के साथ उन्होंने ५१ सूत्रीय अमृत

संदेश जारी किया. 16 मई को भारत साधु समाज अधिवेशन में धर्म से जुड़े 14 प्रस्ताव परित किए गए जिसमें नदियों को आपस में जोड़ने , पर्यावरण को बचाने जैसे अहम मुद्दे शामिल थे.

प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज चौहान ने प्रदेश के साढ़े सात करोड़ नागरिकों को उज्जैन पधारने के लिए आमंत्रित करते हुए स्वयंभू महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन, मोक्षदायिनी क्षिप्रा मे स्नान करने के लिए आमंत्रित किया था. मात्र एक आव्हान पर करोड़ों लोगं ने पुण्य स्न्नान का लाभ उठाया और अपने को धन्य माना. यह वह स्थान है जहा देवों के देव महादेव की तड़के चार बजे भस्म आरती में भस्मी चढ़ाई जाती है तो शाम को ड्रायफ़ुड और भांग की सौम्यता लिए अनूठा श्रृंगार हर किसी को आकर्षित करता है. अमूमन तीन हजार की भांग और देढ़ हजार के ड्रायफ़ूड से भोले का श्रृंगार किया जाता हो, लगभग छः हजार साल पुराना कालभैरव का वाम मार्गी तांत्रिक मन्दिर, जिसमें मांस, मदिरा, मुद्रा जैसे प्रसाद चढ़ाये जाते हों, जहाँ स्वयं गढ़कालिका निवास करती हो, जहाँ रिद्धि-सिद्धि गणेश मंदिर अवस्थित हों, जहाँ हरसिद्धी देवी का भव्य मंदिर हो, जहाँ महान तपस्वी गुरु गोरखनाथ की तपःस्थलि हो,वहाँ भला कौन नहीं जाना चाहेगा.

निश्चित ही वे जन बड़भागी हैं जिन्होंने इस महाकुंभ के अवसर पर पधारकर पुण्य-लाभ कमाया है.

4

दादा का पत्र पोते के नाम

प्रिय,

दुष्यंत

मेरा आशीर्वाद.

इस समय तुम अपने लक्ष्य निर्धारण को लेकर योजनाएं बना रहे होंगे. मेरी एक बात याद रखें कि जीवन में आर्थिक, भौतिक रूपी उच्च पदों को लक्ष्य बनाना बुरी बात नहीं है. यदि किसी के कहने से या फ़िर किसी को दिखाने के लिए बनाया गया लक्ष्य कुएं में या खाई में गिरने जैसा होगा. इसका चुनाव अपनी क्षमता, योग्यता एवं मूल्यों के आधार पर सोच-विचारकर ही चुनना चाहिए. चुनाव के बाद इसे बार-बार बदलना ठीक नहीं है. इस बात को हमेशा ध्यान में रखें कि लक्ष्य की कीमत जीवन के बराबर हो, इससे हल्की न हो. लक्ष्य क्षमता के लिए चुनौती पैदा करने योग्य होना चाहिए. अपनी क्षमता के अनुरूप ऎसे लक्ष्य का निर्धारण करना चाहिए,जिसे प्राप्त किया जा सके. भले ही इसे प्राप्त करने में चुनौती का सामना करना करते हुए संघर्ष क्यों न करना पड़े.

मनुष्य होने पर जीवन की चुनौती बनी रहेगी. इसे किसी तरह से नकारा नहीं जा सकता. जीवन की चुनौती को स्वीकार करके उसके रहस्य को उपलब्ध कर लेना भले ही कठिन हो, परन्तु असंभव नही है. लक्ष्य हमारी आन्तरिक शक्तियों को जाग्रत करता है. हमारी सुप्त शक्तियां लक्ष्य पाकर पुष्पित-पल्लवित होने लगती है और हमारा जीवन हर तरह की चुनौतियों और अवरोधों को पार कर अपनी इच्छित मंजिल को प्राप्त कर लेता है. जब हम श्रेष्ठ लक्ष्य की ओर बढ़ने लगते हैं तो हमारी आंतरिक चेतना विकसित और परिष्कृत होती है. हमे ऎसा लक्ष्य चुनना चाहिए,जिसके प्रति मन रम जाए.

जिन्दगी है तो समस्याएं बनी ही रहेंगी. समस्याएं हमेशा के लिए समाप्त हो जाएं, इसमें पूरी ताकत झोंक देने से अच्छा है कि समाधान की कला सीखने में ऊर्जा लगायी जाए. समाधान का एक नाम उपाय ही है. अतः उपाय के बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए. हमेशा यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि बुद्धिमान व्यक्ति अपनी बनाई राह पर चलते हैं. प्रतिभा जहां चलती है, वहीं पथ बन जाता है और वे अपने लिए एक नया परिणाम गढ़ते हैं.

यह काम करने का समय है लेकिन कर्मयोग को उत्सव की तरह मनाएं. जीवन का आनन्द उत्सव में है, काम में नहीं. जो लोग कर्म को काम की तरह करते हैं, वे जीवन को तनाव से भर लेते हैं. यदि कर्म को उत्सव की तरह किया जाए तो उत्साह और आनन्द दोनों बने रहेंगे. जो बातें मन को विपन्न और कुंठित बनाती हैं, उन्हें अपने पास फ़टकने मत देना. कुंठित मन का मतलब है, कुंठित व्यक्तित्व. आत्म-नियंत्रण की शुरुआत इसी विचार से होती है. यही विचार जब हमारा स्वभाव बन जाए तो धीरे-धीरे सारा शरीर उसे आत्मसात कर लेता है. संयत विचार से मानसिक क्रिया को नियंत्रित कर सकें तो जीवन की समस्त परिस्थितियों का सामना करने में हम सक्षम हो सकते हैं.

याद रखें-जीवन में निष्ठा एक परिपक्व और एकत्रित मन की अभिव्यक्ति है. निष्ठा चेतना की अखंड पूर्णता को इंगित करती है. मन की सम्पन्नता को दर्शाती है. एक विभाजित मन इंसान को दिमागी बीमारी की ओर ले जाता है और शारीरिक तथा मानसिक विकार लाता है. याद रखें-निष्ठा ही सच्चा बल है, और सृष्टि भी इसी का साथ देती है.

शक्ति और विवेक हर एक काम के लिए जरुरी है. शक्ति और विवेक को जाग्रत करने का सही तरीका है कि आप अपने वर्तमान पलों का इस्तेमाल भरपूर मन से, अपनी संपूर्ण बुद्धिमत्ता के साथ करें कभी मन में इस तरह के भ्रम को न पालें कि हममें शक्ति और विवेक नहीं है. अपने पूरे तन-मन से अपना कोई भी काम करके देखें, आपका हरेक पल फ़लीभूत होगा.

इंसान की बुद्धि की विशेषता है -तर्क करना. तर्क यदि तथ्यपरक न भी हो तो व्यक्ति का दिमाग अपने ही मकड़जाल में उलझ जाता है. यह स्थिति बड़ी विषम और ऊहापोह भरी होती है. ऎसे में ही वैचारिक द्वंद्व पनपता है. द्वंद्वमय मन शंकाशील एवं संदेहमन हो जाता है एवं जीवन तनावपूर्ण बन जाता है. मन को सकारात्मक सोच पर चलाना और बुद्धि को सही चीजों का चुनाव करना आना चाहिए. जीवन में परिस्थितियां और प्रारब्ध सदैव द्वंद्व पैदा करते हैं द्वंद्व जीवन में न आए, ऎसा संभव नहीं है, परन्तु हमें उबरना आना चाहिए. इसमें फ़ंसकर औरो को कोसने की अपेक्षा कुशलतापूर्वक इससे निकल जाना ही श्रेयस्कर है. यह मजबूत मानसिकता का परिचायक है, जिसका बौद्धिक संपदा के रूप में बेहतर इस्तेमाल किया जा सकता है.

जब व्यक्ति द्वंद्व से परे और पार होना सीख लेता है, तो वह अपनी अभिरूचि को, अपने लक्ष्य के अनुरूप, सही बिंदु तक ले जाने में सक्षम हो जाता है, ऎसे में बौद्धिक बिखराव से बचा जा सकता है तथा विषय केंद्रित होने में सहायता मिलती है. अपनी बौद्धिक क्षमता को सबसे पहले किसी विषय की गहराई में लगाना चाहिए और फ़िर उसके विस्तार में जाना चाहिए. इससे विषय की बारीकी के साथ उसके अनेक पहलुओं के बीच संबंध स्थापित किया

जा सकता है. इस प्रकार कई नए आयाम विकसित होते हैं. जिन्दगी में भटकाव और बिखराव न हो, इसके लिए अपने निर्दिष्ट लक्ष्य के अनुरूप मन की गति बनाए रखने में बुद्धि की अहम भूमिका है.

इस संघर्षपूर्ण जीवन में आपकी सफ़लता का यही एकमात्र मापदंड है कि आप कितने विरोध, कितनी भ्रांतियों और कितनी विपदाओं का सामना कर सकते हैं. आपने जीवन में अडिग रहकर कितना सहन किया है, यही आपकी जीवटता की परख है. अगर आप शिकस्त पर शिकस्त सहकर भी अपना अपना संघर्ष जारी रखते हैं, अगर आप जीवन के अंधकारमय दिनों में भी अपने साहस की पताका ऊँची रख सकते हैं, तो फ़िर कोई दुश्मन भी आपको हरा नहीं सकता.

साहस क्या है?. यह अनुभूति की शक्ति से उत्पन्न होने वाला विश्वास है. यह किसी संकट से झूझने का अदम्य निश्चय है. आत्मसम्मान, आत्माभिमान और आत्मविश्वास से हम साहस की भावना विकसित कर सकते हैं. कोई भी बात, जो हमारी योग्यता में हमारे विश्वास को दृढ़ बनाती है, वह हमारा साहस बढ़ाती है. जिस आदमी में आत्मविश्वास नहीं, वह साहसी नहीं हो सकता. किसी काम को करने का सामर्थ्य साहस नहीं है. साहस उस काम के प्रति अपना रवैया है और वह सफ़लता-असफ़लता की विभाजनरेखा है. कोई व्यक्ति किसी काम को भलीभांति कर सकता है, लेकिन अगर वह उसे अनिश्चयपूर्ण मन से डरते- झिझकते शुरू करता है, तो आधी बाजी उसी समय हार देता है. अतः जीवन में यह ध्यान बना रहे कि तैयारी से भी साहस बढ़ता है.

इंसान में सही समझ तभी आती है, जब उसका मन बिलकुल शांत होता है, चाहे वह पल भर के लिए ही क्यों न हो. जब मन में विचारों का कोलाहल न हो. तब सही समझ की कौंध होती है. आप भी यह प्रयोग करके देखें तो पाएंगे कि जब मन एकदम निश्चल हो, जब उसमें विचारों की विद्दमानता न हों, उसके कोलाहल से मन बोझिल न हो, तब समझ की दमक, अंतर्दृष्टि की एक असाधारण चमक की अनुभूति होती है. इस प्रकार किसी के बारे में समझ, चाहे वह चित्रकला के बारे में हो, किसी सजीव या निर्जीव वस्तु के बारे में हो, तभी आ सकती है, जब हमारा मन सभी तरह के विचारों से दूर, बिलकुल शांत ढंग से उसी पर टिका हो. परन्तु मन की इस मौन निश्चलता का संवर्धन नहीं किया जा सकता क्योंकि यदि आपका निश्चल मन को संवर्धित करेंगे तो निश्चल नहीं,, चल मन होगा.

दरअसल जिस चीज में आप जितनी अधिक रुचि लेते हैं, उतनी ही अधिक उसे समझ लेने की आपकी दत्तचित्तता बढ़ जाती है. मन उतना ही सरल, स्पष्ट और मुक्त हो जाता है. तब शब्दों का कोलाहल थम सा जाता है. आखिर विचार शब्द ही तो होते हैं और यह शब्द ही हैं जो हस्तक्षेप करते हैं. स्मृति रूप में यह शब्द पट ही है जो किसी चुनौती और उसके प्रत्युत्तर में ही की जा रही क्रिया के बीच आ कूदता है. यह शब्द ही है जो चुनौती का प्रत्युत्तर देता है, जिसे बौद्धिक प्रक्रिया कहते हैं. आखिरकार जो मन शब्दों के जंजाल में उलझा हुआ हो, वह सत्य को भी नहीं समझ पाता.

आशा ही नहीं अपितु मेरा अपना विश्वास है कि अब आपके सामने सारे चित्र/ मंत्व्य स्पष्ट हो चुके होंगे. मुझे तो यह भी विश्वास है कि अब आप अपने जीवन में संतुलन कायम करते हुए और कर्म करते हुए तनाव को तिलांजलि दे सकेंगे.

मेरा स्नेह और आशीर्वाद तुम्हारे साथ है.

१०३, कावेरी नगर,छिन्दवाड़ा (म.प्र.) ४८०-००१ आपका दादा

९४२४३-५६४०० गोवर्धन यादव.

5 **कमलेश्वर को याद करते हुए**

जन्म 6 जनवरी 1932 (मैनपुरी उ.प्र.) मृत्यु- 27 जनवरी 2007(फ़रीदाबाद हरियाणा)

" अजीब दिन थे, नीम से झरते हुए फ़ूलों के दिन. कनेर में आती पीली कलियों के दिन. न बीतने वाली दोपहरियों के दिन और फ़िर एक के बाद एक-लगातार बीतते हुए दिशाहीन दिन". अपने चर्चित उपन्यास " कितने पाकिस्तान" में जब यह पंक्तियां कमलेश्वर ने लिखीं होगीं तो सोचा भी नहीं होगा कि ऎसी ही किसी वसन्त ऋतु में वे इस संसार को अलविदा कह जाएंगे.

आगरा विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक में अज्ञानवश कमलेश्वर के नाम के आगे स्वर्गीय लिखा गया था. जब यह बात उनके मित्रों ने उन्हें फ़ोन पर बातें करते हुए पूछा था- "कमलेश्वर तुम मरे कब थे?" बातों ही बातों में खुलासा हुआ और उन्होंने उसी अंदाज में एक लेख लिखा "कमलेश्वर अभी जिन्दा है". आज हम जब कमलेश्वर के कहनी संग्रह" राजा निरबंसिया" पर चर्चा करते हैं तो इस बात की याद हो आना स्वाभाविक है कि सचमुच एक ख्यातिलब्ध साहित्यकार, अद्भुत कथा-शिल्पी, बेजोड़ पत्रकार, कुशल पटकथा लेखक जो कहानियों के माध्यम से, सिनेमा के माध्यम से, उपन्यास के माध्यम से, भास्कर में प्रति सोमवार को एक आलेख के साथ घर-घर तक पहुंच जाने वाला कमलेश्वर, सचमुच में आज हमारे बीच नहीं है. साहित्य सिनेमा के माध्यम से गहरे व जीवन्त रूप से जुड़े कमलेश्वर ने मनोहर श्याम जोशी के तर्कों को आत्मसात करते हुए कहा था कि-" जो भी विद्या मुझे पास बुलाएगी, उसके पास जाना चाहूंगा. अनामंत्रित ढंग से विद्याओं से मेल-मिलाप नहीं करुंगा"

उन्होंने एक फ़िल्म "आंधी" की पटकथा लिखी थी जिसकी नायिका सुचित्रा सेन थी, के हाव-भाव को इंदिरा गांधी से जोड़कर देखा गया. आपातकाल के दौरान सरकारी पक्ष के बहिष्कार का एक अनुठा तरीका इजाद किया था उन्होंने और सारिका के पन्नों में उन अंशों को सरकारी नौकराशाहों के सामने रखने की बजाय काली श्याही से ढंककर अपना विरोध जताया था. दूरदर्शन के क्षेत्रीय निदेशक बनाने की चर्चाओं के बीच जब वे तत्कालीन प्रधानमंत्री

श्रीमती इंदिरा गांधी जी से मिलवाये गए तो उन्होंने बड़ी ही बेबाकी से बताया कि मैंने आपातकाल के खिलाफ़ अखबारों में तमाम सम्पादकीय और आंधी फ़िल्म की कहानी लिखी है. इंदिराजी उनकी बेबाकीपन और स्पष्टवादिता की कायल हुईं और 80-82 के मध्य वे दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक के पद पर आसीन किए गए.

वे साहित्य को परम्पराओं और सीमाओं में बांधने के खिलाफ़ थे. श्री राजेन्द्र यादव तथा मोहन राकेश के साथ मिलकर उन्होंने "नई कहानी" आंदोलन का सूत्रपात किया था. प्रसिद्ध आलोचक डा.नामवरसिंह ने उनकी नई कहानी को श्रेय न देकर निर्मल वर्मा की कहानी " परिन्दे" को श्रेय दिया था. सही शब्दों में कहा जाए तो श्री कमलेश्वर नई सृजनशीलता के प्रणेता ही नहीं, वरन हर उस नयेपन के समर्थक थे, जिसकी सामाजिक सार्थकता पर उन्हें यकीन था. उनका स्वयं का व्यक्तित्व और साहित्य मानवतावाद को प्रतिबिम्बित करता है. अपनी रचनाओं में उन्होंने एक तरफ़ शहरी जीवन की जटिलताओं-समस्याओं और संवेदनशून्यता तथा जीवन की धृष्टताओं को बखूबी रेखांकित किया तो समकालीन जीवन के जटिल प्रश्नों को सेकुलर दृष्टि से सुलझाने का प्रयत्न किया. इस तरह उनके लेखन में संप्रेषणीयता आयी, वहीं वे प्रयोगधर्मी भी बने रहे. अपनी रचनाओं में उन्होंने लोक शैली व उससे जुड़े प्रतीकों का भी जीवन्त रूप में इस्तेमाल किया.

"नयी कहानी" आंदोलन के सूत्रपात के साथ ही उन्होंने मुंबई में "सारिका" का संपादन, साथ ही समान्तर कहानी आंदोलन चलाया, जिसमें मराठी के दलित आंदोलन को शामिल कर अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया. आज हिन्दी में दलित साहित्य आंदोलन की जो रूप रेखा है उसके पीछे आपका बड़ा हाथ था. वस्तुतः कमलेश्वर ऎसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने समय से आगे जाकर सोचने का जज्बा था.

सारिका में श्री कमलेश्वर जी ने लेखकों के संघर्ष को चित्रित करता एक स्तम्भ " गर्दिश के दिन" प्रारंभ किया जो काफ़ी लोकप्रिय हुआ. उनकी सदाशयता इतनी मशहूर थी कि कई जरुरतमंद कथाकारों को वे पहले पारिश्रमिक दे दिया करते थे और उनकी कहानियां बाद में प्रकाशित होती थीं. आपने सैंकड़ों फ़िल्मों व धारावाहिकों की पटकथाएं लिखीं, जिनमें "आंधी" और "बर्निंग ट्रेन" काफ़ी चर्चित रहीं. आपको दूरदर्शन के प्रथम पटकथा लेखक के रूप में जाना जाता था. परिक्रमा तथा बंद फ़ाईलें काफ़ी लोकप्रिय हुए. भारतीय कथाओं पर आधारित प्रथम साहित्यिक धारावाहिक "दर्पण" भी कमलेश्वर जी ने ही लिखा था. संभवतः प्रेमचंद जी के बाद कमलेश्वर ही एक ऎसी शख्सियत थे, जिन्होंने आजीवन अपने शब्दों को हथियार बनाकर शोषण के विरुद्ध सर्वहारा बनकर संघर्ष किया कमलेश्वर के व्यक्तित्व और रचनाधर्मिता को किसी खास फ़्रेम में जड़कर देखना मुनासिब नहीं होगा. वे एक साथ बहुत कुछ थे. 'कितने पाकिस्तान" में उन्होंने हर प्रकार की साम्प्रदायिकता व अंधता पर जमकर चोट की. हिन्दी में "कितने पाकिस्तान" पहला ऎसा उपन्यास है जिसके बारह संस्करण छपे और हाथों हाथ बिक गए. यहां तक की लोग फ़ोटो कापी पढ़कर ही संतुष्टि पाने लगे थे. बीसियों भाषा में इस उपन्यास का अनुवाद हुआ.

कमलेश्वर से जुड़ना यानि अपनी चेतना से जुड़ना होता है. वे कब अचेतन मन से होते हुए चेतना के फ़लक पर आ जाते हैं, पता ही नहीं चल पाता. बचपन से लेकर अब तक उनकी, न जाने कितनी ही कहानियां मुझे

पढ़ने को मिली, वे अपनी जोरदार उपस्थिति के साथ कहानियों को नया मोड़ देते दिखे, नया शिल्प देते दिखे. उपन्यास तो उनके ढेरों हैं पर "आंधी" ही पढ़ पाया जिस पर फ़िल्म भी बनी थी.

उन्होंने कहानियों के अलावा उपन्यास, समीक्षाएं, नाटक, संस्मरण आदि लिखे. एक बार पाठक-मंच से उनका कहानी संग्रह " राजा निरबंसिया" पढ़ने को मिली, जिसमें कुल जमा सात कहानियां है. देवा की मां, पानी की तस्वीर, धूल उड़ जाती है, सुबह का सपना, मुरदों की दुनियां, आत्मा की आवाज तथा राजा निरबंसिया. कितनी ही बार ये कहानियां पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से सामने आयीं. जितनी भी बार पढ़ा, हर बार कुछ नयी सी लगी मुझे. आपके लिखने का ढंग ही कुछ ऎसा था जो पाठकों को बांध कर रखता है. यथार्थ और कल्पनाशीलता का अद्‌भुत समन्वय यहां देखने को मिलता है, जो रागात्मक संबंधों को जोड़ता है. भावुकता का अतिरेक होने के बावजूद उनके पात्र कमजोर नहीं पड़ते. एक अद्‌भुत जिजीविषा के साथ खड़े दिखाई पड़ते हैं. पात्रों का चित्रण सहज और स्वाभाविक होता है. कहीं भी कृत्रिमता दिखाई नहीं देती. कथावस्तु में तात्कालिकता की तीव्रता, भावुकता व आवेगधर्मिता से मुक्त होते हुए भी पात्र अपना असर डालते हैं.

कमलेश्वर में यह गुण सदा से रहा है कि वे स्वयं आगे बढ़कर अपना कद नहीं बढ़ाते बल्कि अपने समकालीनों-समवय तथा खासकर युवा पीढ़ी को भी मार्ग देते रहे हैं. एक बार संबंध स्थापित हो जाने पर आप भले ही भूल जाएं, कमलेश्वर की स्मरण-शक्ति से आप बाहर नहीं जा सकते. आप उन्हें पत्र डालना भूल जायें लेकिन कमलेश्वर अपने पत्रों के माध्यम से उन तक जा पहुंचते और उनका हाल जान लेते.

आज वे हमारे बीच भले ही नहीं हैं लेकिन अपनी कहानियों आदि के माध्यम से हमारे आसपास, हमारे ही इर्दगिर्द मौजूद हैं.

6

6 कविता की दुनिया : दुनिया की कविता.

कविता की दुनिया:- कवियों द्वारा निर्मित एक ऎसे अनोखी और विराट दुनिया, जिसमें पूरा अखिल ब्रह्मांड समाया हुआ है. यहाँ वह सब कुछ है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती. तभी तो किसी ने कहा है कि- जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि. प्रश्न उठना जालमी है कि आखिर कविता होती क्या है, इसका जन्म कहाँ, कब और कैसे हुआ?. कहते हैं कि कविता का जन्म महर्षि वाल्मिक के समय में हुआ था. एक समय वे तमसा नदी से स्नान कर वापिस लौट रहे थे. इसी बीच एक क्रौंच पक्षी का जोड़ा मैथुन क्रिया में निमग्न था. पक्षी के वध के लिए घात लगाए बहेलिये ने उन पर बाण का संधान किया, जिससे एक क्रौंच पक्षी मारा गया. और दूसरा अपने प्रिय के वियोग में क्रंदन करते हुए विलाप करने लगा. महर्षि ने इसे देखा और तत्काल श्राप दे दिया. श्राप देते समय उनके मुख से ये श्लोक निकले.

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः । यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितम् ।

निषाद, त्वम् शाश्वतीः समाः प्रतिष्ठां मा अगमः, यत् (त्वम्) क्रौंच-मिथुनात् एकम् काम-मोहितम् अवधीः

हे निषाद, तुम अनंत वर्षों तक प्रतिष्ठा प्राप्त न कर सको, क्योंकि तुमने क्रौंच पक्षियों के जोड़े में से कामभावना से ग्रस्त एक का वध कर डाला है ।

उपरोक्त वाक्य जो आठ-आठ अक्षरों के चार चरणों, कुल बतीस अक्षरों से बना था. इस छंद को श्लोक नाम दिया गया. यही श्लोक काव्य-रचना का आधार बना.

साहित्य के पुरोधा आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं कि कविता से मनुष्य-भाव की रक्षा होती है. सृष्टि के पदार्थ या व्यापार विशेष को कविता इस तरह व्यक्त करती है मानो वे पदार्थ या व्यापार-विशेष, नेत्रों के सामने नाचने लगते है. उनकी उत्तमता या अनुत्तमता का विवेचन करने से बुद्धि से काम लेने की जरुरत नहीं पड़ती. कविता की प्रेरणा से मनोवेगों के प्रवाह जोर से बहने लगते है.

आचार्य विश्वनाथ कहते हैं कि “वाक्यम रसात्मकं काव्यम” अर्थात रस की अनुभूति कर देने वाणी काव्य है. पंडितराज जगन्नाथ का मत है कि- “लोकोत्तरानन्ददाता प्रबंध काव्यानाम यातु” यानि लोकोत्तर आनंद देने वाली रचना ही काव्य है. आचार्य श्रीपति के शब्दों में-“ शब्द अर्थ बिन दोष गुण अंहकार रसवान : ताको काव्य बखानिए श्रीपति परम सुजान”.

महर्षि वाल्मिक के प्रसंगानुसार कविता में केवल एक ही रस “करूणा” का नहीं रहता बल्कि उसमें श्रृंगार, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, विभत्स, अद्‌भुत और शांत रस भी अन्तरनिहित होता है. अतः आचार्य विश्वनाथ जी का कथन ““काव्यम रसात्मकं काव्यम”-सही साबित होता है.

काव्य की इस रहस्यमय दुनिया में प्रवेश करते हुए मुझे देशज कवियों के अलावा विश्व के अनेकानेक कवियों की कविताओं को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है. प्रायः सभी की कविताओं में घर परिवार, अनिश्चितताएं, अनिर्णय, दुनिया की जरुरतें, साहस, विफ़लताएं, स्वपन-प्रेम, आत्मग्लानियां, हताशाएं, सुख-दुख, निर्ममता, इंसानियत, हैवानियत, खूंखार दरिन्दों के जुल्म आदि के पुट देखने को मिलते है. यह सब पढ़ते हुए मुझे नीदा फ़ाजली जी का एक शेर याद आता है. वे कहते हैं- इन्सान में हैवान यहाँ भी है, वहाँ भी, अल्लाह निगहबान, यहाँ भी है, वहाँ भी है, खूंखार दरिन्दों के फ़कत नाम अलग है, शहरों में बयाबान, यहाँ भी है, वहाँ भी है. रहमान की कुदरत हो, या भगवान की मूरत, हर खेल का मैदान, यहाँ भी है, वहाँ भी है, हिन्दू भी मजे में हैं, मुसलमां भी मजे में है, इन्सान परेशान, यहाँ भी है, वहाँ भी है, उठता है दिलोजां से धुँआ दोनों तरफ़ ही, ये मीर का दिवान, यहाँ भी है, वहाँ भी है.

प्रकृति ने हर इन्सान को कवि हदय बनाया है. यह बात अलग है कि हर कोई कविता नहीं लिख सकता. फ़िर कविता लिखना इतना आसान भी नहीं है कि हर कोई उसमें निष्नात हो जाए. शायद इन्हीं भावनाओं को रेखांकित करती हुई चेकोस्लाविकी कवियत्री ने एक जगह लिखा है-: फ़िर फ़ूलदान में मैंने एक गुलाब लगाया...एक मोमबत्ती जलाई...और अपनी पहली कविताएँ लिखना शुरु किया...जागो, मेरे शब्दों की लपट...ऊपर उठो...चाहे जल जाएं मेरी उँगलियाँ.

इस आलेख में मैंने विश्व के कुछ चुनिंदा देशों के कवियों के साथ-साथ यहाँ के कुछ कवियों का भी चुनाव किया है. इन कविताओं को पढ़कर आपको यह महसूस होगा कि समूचे विश्व में एक से हालात हैं, जिनसे विरुद्ध खड़े होकर उसने अपने स्वर मुखरित किए हैं.

हंगरी कवि -- अत्तिला योजेफ़ (1905-1937)

लोग मुझे चाहेंगे. - अच्छे और बुरे को लेकर मैं मथापच्ची नहीं करता / काम करता हूं और खटता हूं, बस / बनाता हूं मैं पंखे से चलने वाली नावें, चीनी मिट्टी के प्याले-प्लेटें / बुरे वाक्तों में बुरी तरह, औसत वक्तों में अच्छी तरह / अनगिनत हैं मेरे कारखाने,सिर्फ़ मेरी प्यारी / उनकी फ़िक्रमंदी करती है, उनका हिसाब-किताब रखती है. / मेरी प्यारी ही उस सबका हिसाब-किमाब करती है / उसमें विश्वास है, लेकिन पंथ और सौगंध के सम्मुख वह चुप रहती है./ मुझे दरख्त बनाओ, यकीनन कौआ, तभी मुझ पर घोंसला डालेगा / जब आसपास और कोई दरख्त न हो

फ़िनिश कवि - आउलिक्की ओकसानेन

दूसरा पल --कहीं है दूसरा पल, / दूसरी तरह की जलवायु, / दूसरा समुद्र, दूसरा द्वीपसमूह / कुछ ऎसा, जिसे जीते हुए अनुभव किया जाता है / जब गहराइयों का पानी परावर्तित होता है / तरंगों में गोता लगा गए शुष्क मेघ / कहीं है दूसरा भ्रमण / अज्ञात पक्षियों की दुनिया / हल्का सा सरकंडे का पुल ग्रीष्मों और पक्षियों के घोंसलों के ऊपर से, / शांत आकाश, सुखद संध्या, / देश जहाँ गीत सो रहे हैं / नक्षत्रों के किनारों पर, अप्रत्याशित से भयभीत हुए बिना,

कवि-२ किर्सी कुन्नास (अनुवाद:सईद शेख)

पेड़ ढोते हैं प्रकाश---पेड़ ढोते हैं प्रकाश / लेकिन मौन एक हल्का सा पक्षी / उड़ता है पानी के ऊपर से / पेड़ ढोते हैं प्रकाश / लेकिन धूसर पंख उठता है पानी और आकाश से / मौन, हल्का सा पक्षी / बैठ जाता है पेड़ों पर और सुलगा देता है अपना घोंसला, / आग के रूप में प्रकाश उठता है आकाश की ओर / न ही ढो सकता है कोई भी अपने हृदय को हल्केपन से / क्योंकि प्रेम होता है पीड़ामय / ठीक जैसे पक्षी का एकमात्र गीत.

कोरिया कवि. - रा.हीदुक (Ra Heeduk) (अनुवाद-दिविक रमेश)

एक और पत्ता. अपना दर्द छिपाने को / तोड़ती रही हूं पत्ते / इसीलिए नंगे हैं वृक्ष / और इसीलिए इतना थोड़ा पक्षी-गीत / पर कैसे छिपा सकती हूं सूखे पत्ते से / सीमेंट के फ़र्श का भद्दापन ? / कैसे खत्म कर सकती हूं कोलाहल / पक्षी-गीत से भरी गली का ? तब भी नहीं थमेंगे मेरे होंठ हिलने से / सो करती हूं इकठ्ठा पत्ते और पक्षी गीत / एक और पत्ता गिरता है मेरे पैर पर / उड़ जाता है वह पक्षी जिसकी आवाज खो गई थी.

यूनान कवि. कंस्तान्तिन कवाफ़ी (अनुवाद-अनिल जनविजय)

दिसम्बर 1903 ..... जब मैं बात नहीं कर पाता अपने उस गहरे प्यार की / तेरे बालों की, तेरे होंठों की, आंखों की, दिलदार की / तेरा चेहरा बसा रहता है मेरे दिल के भीतर तब भी / तेरी आवाज गूंजा करती है, जानम, मेरे मन में अब भी / सित्म्बर के वे दिन सुनहले, दिखाई देते हैं सपनों में / मेरी ज़ुबान तो ओ प्रिया, बस गीत तेरे ही गाती है / रंग-बिरंगा रंग देती है तू मेरी सब रातों को अपनों में / कहना चाहूं जब कोई बात, बस, याद तू ही तू आती है.

फ़्रांस कवि लुई आरागों. (अनुवाद हेमन्त जोशी)

पूर्वाग्रह...... मैं चमत्कारों के बीच नाँचता हूं / हजारों सूर्य रंगते हैं आकाश / हजार दोस्त, हजार आंखें या एक चश्म / अपनी निगाहों से मुझे देते हैं आकार / राहों पर जैसे रोया हो तेल / सायबान के बाद से खोया है खून / ऎसे मैं कूदता हूं एक दिन से दूसरे तक / बहुरंगी गोल और खूबसूरत / जैसे धनुष का जाल हो या रंगों की आग / जब लौ का रंग है हवा-सा / जीवन ओ ! शांत स्वचलित वाहन / और आगे दौड़ने का आनन्दमायी संकट / मैं जलूंगा रोशनी की आग से.

कवि-२ (२) **पाल एल्युआर.**

मेरे नयन / शांत कभी थे ही नहीं / सागर के उस विस्तार को देखते हुए / जिसमें मैं डूब रहा था / अंततः सफ़ेदे झाग उठा / भागते कालेपन की ओर / सब मिट गया.

रुस कवि युन्ना मोरित्स. (अनुवाद-शीतांशु भारती.)

वहां है- हवा,सूरज,तारे और चाँद /वहां है-हवा, पत्तियों की डालियाँ / तारों में आसमान / वहाँ है-हवा, ऊंचाइयाँ लम्बाइयाँ / और गहराइयाँ./ वहाँ है प्रेम, वहाँ है-हवा, हवा, हवा / वहाँ है सब जो मैं आपको देना चाहती हूं. // बाकी आप सुन लीजिए / गाने वाली चिड़ियों से, फ़ुर्तीली छिपकलियों से / विवश हो जाएं कहने को / चीतल, हाथी, चमगादड़ / घोंघें संग ततलियां . /और बाबा आदम के जमाने की / समुद्री मछलियाँ // बात कीजिए / छुड़मुड़यों से, गुल्बहारों से / सुनिए, इन्हें भोर से सांझ तक. / पर मैं न दूँगी आपको / किसी भी घोर यातना के डर से / किसी पुनरजन्म के वादों पे / किसी अनोखी खुशी के बदले / मैं नहीं दुँगी वो रोशनी / जो भाईचारे के इस बंधन को कस के बाँधती है / जो एक दूसरे से प्रेम करना सिखाती है.

ब्रिटिश कवि- हैराल्ड पिंटर (अनुवाद व्योमेश शुक्ल)

लोकतंत्र ....कोई उम्मीद नहीं / बड़ी सावधानियां खत्म / ये दिख रही हर चीज की मार देंगे / अपने पिछवाड़े की निगरानी कीजिए. (२) बम- ...और कहने के लिए शब्द बाकी नहीं है / हमने जो कुछ छोड़ा है सब बम है / जो हमारे सरों पर फ़ट जाते हैं / हमने जो कुछ छोड़ा है सब बम है / जो हमारे खून की आखिरी बूंद तक सोख लेते हैं. / जो कुछ छोड़ा है सब बम है / जो मृतकों की खोपड़ियां चमकाया करते हैं.

क्यूबा कवि. निकोलस गियेने. (अनुवाद श्रीकांत)

कविता पहेलियां. दातों में, सुबह,/ और रात चमड़ी में / कौन है, कौन नही / नीग्रो / उसके एक सुन्दर स्त्री न होने पर भी / वही करोगे, जो उसका हुक्म होगा / कौन है, कौन नहीं / भूख / गुलामों का गुलाम / और मालिक के संग जुल्मी / कौन है, कौन नहीं ./ गन्ना / छुपा लो उसे एक हाथ से / ताकि दूसरा कभी जाने भी नहीं / कौन है, कौन नहीं / भीख / एक इंसान जो रो रहा है / एक हंसी के साथ जो उसने सीखी थी / कौन है, कौन नहीं.

चीन कवि छाओ-छाओ - ईसवी सन 155-20 (अनुवाद- त्रिनेत्र जोशी)

कब्रिस्तान का गीत.- दर्रे के पूरब में शूरवीर / सशत्र तैयार गद्दारों को दंडित करने के लिए / पहले मंगचिन में एकत्र होते हैं / लक्ष्य है श्येनयांग / पर सहयोगी टुकड़ियों मे आपस में ठनी है / अनिर्णय की स्थिति-मुर्गावियों जैसी अपनी तू-तू-मैं-मैं / ताकत और जीत को बेताब, होते हैं परास्त / और एक दूसरे के खून के प्यासे / हवाइ के दक्षिण में एक नौजवान हथिया लेता है राजसी पद्वी / उत्तर में एक राजा बना लेता है अपनी अलग मोहर / शस्त्रों से लेस लोग चलते हैं भड़भड़िये / मौते बेहिसाब / चारों तरफ़ फ़ैलती हैं बेरंग पड़ रही हड्डियां छितर-बितर / हजारों ली तक भी नहीं सुनाई पड़ती कुक्कुट की बांग / प्रति सैकड़ा बच पा रहे हैं एकाध / सोचने भर से दरक उठते है दिल.

लैटिन कवि पाब्लो नेरुदा (अनुवाद-वंदना देवेन्द्र.)

मैं कुछ चीज समझता हूँ. तुम पूछोगे: वे नीले फ़ूल कहां गए? और / अहिपुष्प पंखुरियों का तत्व विज्ञान और / अपनी शब्दावली दुहराती रन्ध्रों, / चिड़ियों को सबक सिखाती बरसात ? / मैं तुम्हें सभी सूचनाएं दुँगा, / मैं एक उपनगर में रहा, मेड्रिड के एक घण्टियों, / घड़ियों और पेड़ों के उपनगर में, / वहाँ से आप मध्य स्पेन का खुश्क चेहरा देख सकते हैं: एक चमड़ा समुद्र जैसा कुछ / मेरा घर फ़ूलों का घर कहा जाता था / क्योंकि इसके हर एक कोने-आंतरों में जेरेनियम फ़ूलते थे: / यह बच्चों और कुत्तों से बसा एक बढ़िया आवास था / कुछ याद है राउल / / तुम्हें रफ़ेल ? / फ़ेड्रेको, क्या तुम्हें याद है / मेरे छज्जों पर जून की रोशनी / फ़ूलों को तुम्हारे कंठ में उतार देती थी?

(ii) आज की रात लिख सकता हूँ- (अनुवाद- मधु शर्मा) --लिख सकता हूं आज की रात / सबसे उदास पंक्तियाँ / लिखूँ, जैसे-" रात है तारों भरी, / तारे हैं नीले, टिमटिमाटे कहीं दूर / रात को हवा चक्कर काटती है, आकाश में और गाती है / आज की रात लिख सकता हूँ , सबसे उदास कविताएँ. / मैंने प्यार किया उसे, कभी-कभी उसने भी किया मुझे प्यार / आज की रात जैसी उन रातों में, बाँहों में थामे होता था उसे मैं / कितनी ही बार चूमा उसे मैंने, इस अन्तहीन आकाश तले / उसने मुझे प्यार किया कभी-कभी मैंने भी किया उसे प्यार / कोई कैसे न करता उसकी बड़ी-बड़ी शांत आँखों से प्यार / आज की रात लिख सकता हूँ सबसे उदास कविताएँ / सोचते हुए कि नहीं है वह मेरे पास

इस्ताम्बुल कवि नाजिम हिकमत (अनुवाद- चन्द्रबली सिंह)

पाल रोबसन से .... वे हमें अपने गीत नहीं गाने देते है, रोबसन / ओ गायकों के पक्षिराज नीग्रो बन्धु, / वे चाहते हैं कि हम अपने गीत न गा सकें / डरते हैं, रोबसन / वे पौ के फ़टने से डरते हैं / देखने / सुनने / छूने से /

डरते हैं./ वैसा प्रेम करने से डरते हैं / जैसा हमारे फ़रहाद ने प्रेम किया (निश्चय ही तुम्हारे यहां भी तो कोई फ़रहाद हुआ, रोबसन, नाम तो उसका बताना जरा?) / उन्हें डर है / बीज से / पृथ्वी से / पानी से / और वे / दोस्त के हाथ की याद से डरते हैं / जो हाथ कोई डिसकाउंट, कमीशन या सूद नहीं मांगता / जो हाथ उनके हाथों से किसी चिड़िया-सा फ़ंसा नहीं / डरते है, नीग्रो बन्धु / वे हमारे गीतों से डरते हैं, रोबसन

कजाकिस्तान कवि ऐवे कुनानावेव (अनुवाद-महाश्वेता देवी.)

मनुष्य मल से भरा बोरा है- / जब तुम मरते हो, मल से भी अधिक दुर्गन्ध तुम से आती है / तुम्हें गर्व है कि तुम मुझसे ऊपर हो / किन्तु यह तुम्हारे अन्धकार का चिन्ह है / कल तुम बालक थे / किन्तु अब तुम्हारे ढलते दिन हैं / तुम्हें विश्वास हो गया कि तुम समान स्थिति में नहीं रह सकते / जीवों से प्यार करो / और ईश्वरीय रहस्य को समझो / इस जीवन में इससे अधिक विस्मय / और क्या हो सकता है.

(२) मैंने तुम्हें पिल्ले से कुत्ता बना दिया / और जब वह मेरे पैर में काटता है / मैंने किसी को लक्ष्य-भेद करना सिखाया / और उसने चतुराई से मुझे ही निशाना बनाया.

पोलिश कवि- विस्वावा शेम्बोर्स्का. (अनुवाद-अब्दुल बिस्मिल्लाह)

वियतनाम- ....तुम्हारा नाम क्या है औरत? मैं नहीं जानती / तुम कब पैदा हुई, कहाँ घर है तुम्हारा ?- / मैं नहीं जानती / तुमने धरती पर गढ़ढा क्यों खोदा? - मैं नहीं जानती / तुम कब से यहाँ छिपी हुई हो ? मैं नहीं जानती / तुमने दोस्ती की डोर क्यों तोड़ दी ? मैं नहीं जानती / क्या तुम नहीं जानती, कि हम तुम्हें, कोई नुकसान नहीं पहुँचाएंगे?~ मैं नहीं जानती / तुम किसके पक्ष में हो? मैं नहीं जानती / यहाँ तो युद्ध हो रहा है, तुम्हें चुन लेना चाहिए अपना पक्ष !- मैं नहीं जानती / क्या तुम्हारा गाँव अब भी बचा है? मैं नहीं जानती / क्या ये बच्चे तुम्हारे है? / हाँ.

अफ़्रीका कवि जोर्फ़े रोचा (अनुवाद-राजा खुगशाल)

जेसा मेंडेज से अंतिम बातचीत (लंबी कविता के कुछ अंश) ....मैं जानता था जेसा / जानता था कि तुम पैदा हुए थे / कांति के साथ कदम बढ़ाने के लिए / सच्चे और गहरे अर्थों में वीर थे तुम / तुम सच्चे अर्थों में प्यार थे संघर्ष के / मैं अच्छी तरह जानता हूं जेसा / विप्लव और प्रेम की कौंध थे तुम / स्वतंत्र चेता और मुक्त हृदय /. पूरी तरह समर्पित थे अपने कर्म के प्रति / शांति से सोओ योद्धा, ओ योद्द्धा / जब खत्म करूँगा मैं इन अनाश्वयक बातों को / जो महज एक बाधा है / तुम्हारी वीरतापूर्ण नींद में / इस देश की मिट्टी में / जहाँ दुश्मन की बंदूकों से धराशायी हुए तुम / शांति से सोओ / अब कभी नहीं सनसनाओगे तुम / उन सतहों पर / जिन्हें उघाड़ने की कोशिशें की तुमने / निश्वय ही विजय की ओर बढ़ रहा है / क्रांति का परचम / जबकि मुझे दुख है सिर्फ़ अपना / मैं नतसिर हूं / उस महान की महानता के सन्मुख / अलविदा जेसा मेंडेज / हमेशा के लिए अलविदा.

जापान कवि ओना नो कोमाची. (अनुवाद-मधु शर्मा)

(एक) यदि वह एक सपना था / फ़िर से देखुंगी मैं तुम्हें / क्यों छोड़ दिया जाए अधूरा ही / जागा हुआ प्रेम (दो) कोई तरीका नहीं उसे देख पाने का / चाँद के बिना इस रात में / पड़ी हूं मैं जागती हुई अच्छा में जलती / दौड़ती है आग सीने में / दिल धड़कता है. *(तीन)* साँझ के धुंधले उजाले में / गाती है चिड़िया मेरे पहाड़ी गाँव की / कोई नहीं आएगा आज की रात / इस सुर को बचाने. *(चार.)* कितने अदृष्य तरीके से / बदला करते हैं रंग / इस दुनिया में / इंसानी दिल के फ़ूल.

श्रीलंका कवि डब्ल्यू ए. अबेसिंघे (अनुवाद- रमेश चन्द्र शाह)

जंगल में बुद्ध- बज्रकठोर पर्वत हुआ / मुलायम पंखुड़ी सा / विकराल चेहरा चट्टान का /जगमगा उठा है जीवित रक्त माँस से / रेशम से भी स्निग्ध जिस का स्पर्ष / शिलीभूत तमिस्रा / प्रपात बन फ़ट पड़ी प्रकाश का / बोधि का किरणों से नहलाते जग-जग को / कब से अधमुंदे नयन / बुलबुलों की तरह वर्षो-शताब्दियों को / मेटते महाकाल में / इस गहन कान्तार के निर्जन में / करुणामय...ध्यानलीन...हे महाबुद्ध / इस पुरातन वृक्ष तले जाने कब से बैठे हुए / अपनी मैत्री और विश्व-प्रेम के साथ / आओ हमारे इस मनुष्य-लोक के बीचोबीच / दुःखों से दग्ध इस धरा को-नहलाओ हे महाभिषग / बोओ बीज मैत्री के / हमारे दिलों के / बंजर बियाबान में.

वियतना कवि दियु न्हान- (अनुवाद-प्रेम कपूर / कुसुम जैन.)

जन्म-.....जन्म, बुढ़ापा, रोग, मृत्यु / ऎसा ही होता आया है हमेशा से / इनसे जितना भी दूर जाने का प्रयास करो / कसती ही जाएगी इसकी गाँठ / इस प्रकार अज्ञान ले जाएगा तुम्हें बुद्ध की ओर / और कठिनाइयाँ ध्यान की ओर / न ही ध्यान की ओर / शांत रहो / शब्द तो कोरी बातें हैं

कवि (२) न्युएन त्राइ

स्वपन भंग........स्वर्णिम स्वप्न से जागने पर नहीं रहता शेष / लगता है सब कुछ हो जैसे रिक्त / अच्छा होगा पहाड़ पर बनाएं एक कुटी / उसमें रहें, पढ़ें, प्राचीन ग्रंथ और हों संतुष्ट / जंगल में खिलते फ़ूलों को सुनते हुए

कवि(३) वान हान्ह....

.मानव जीवन-- क्षणभंगुर है मानव-जीवन विद्युत की तरह / आज जन्म है तो कल मृत्यु / वसन्त के हरियाले वृक्ष / हो जाते हैं पत्रहीन शरद में / अतः उत्थान या पतन की क्या चिंता / ओस की बूंद सी है उन्नति व अवनति / जो घास पर मोती जैसी लगती है.

कवि(४) न्गुएन फ़ि रवान्ह

यदि प्रेम है मुझसे तो भी / सोचो अपने देस के बारे में / न सहने दो अन्याय / अपनी पितृ-भूमि को

जापान कवि. - ककिनोमोतो हितोमारो (अनुवादक:प्रमोद पाण्डॆ)

उलझे शैवाल से / एक गहन प्रेम में / मैं और मेरी प्रेम-परी / सोया करते थे साथ-साथ / लिपटे-सिकुड़े-सिमटे / लेकिन कितनी कम रातें थी हमें मिली / जब हम दोनों थे साथ-साथ / दूर-दूर तक गया अनवरत / मेरा काला अश्व मुझे ले गया / दिग-दिगंत छोड़ता पीछे / मुझको वह ले गया प्रिया तीर / आह ! / हे रक्तिम पर्ण वृक्ष में पल के / पतझर में झर रहे पहाड़ी पर / क्षण भर रोको झरता यह पत्तों का / ताकि / मैं देख सकूं / अपनी प्राण प्यारी का निवास.

कवि-२ ओनो नो कोमाची.

प्रिय मेरा मुझको नहीं मिला ! / मिलन की विह्वलता / यह अमानिशा / है बढ़ा रही / मेरे वक्षस्थल से होकर जाती है अग्नि-शिखा / करती है भस्मीभूत हृदय को / जब उसका चिन्तन करती हूं / जो शायद यह कल्पना करे / उसका चेहरा देख रही हूं. / अगर जानती / बस यह था इक स्वपन / मैं कभी न जागी होती...

क्यूबा कवि - जोस मार्ती. (अनुवाद प्रमोद पाण्डे)

ग्वाटेमाला की लड़की.-- आह ! कह लेने दो मुझको, वह मधुर कथा / उस छाया में, मैं खड़ा जहाँ इस समय / यह कथा उसी ग्वाटेमाला की लड़की की, / जिसने त्यागे थे प्राण / प्रेम की वेदी पर / उसके शव पर थे हार, / कुमुदिनी पुष्पों की / सब सुरभि रूप वे पुष्प / चमेली जिनके चारों ओर गुंथी / हमने था उसको दफ़नाया / रेशम के उस ताबूत में / उसने अपने प्रेमी को / दी थी छोटी सी शीशी / थी जिसमें मधुर सुगंध भरी , पर / लौटा वह विवाह करके बस / तभी प्राण त्यागे थे उसने, / जिसकी हूँ मैं कथा कह रहा / वे कांधों पर ले गए उसे / सब पंडित और पुजारी थे / आए थे कितने युगल, उसे श्रद्धांजलि देने, / चढ़ा- चढ़ाकर पुष्प हार / धीरे-धीरे / जब सांझ ढली, / उस कब्र खोदने वाले ने / था मुझे बुलाया / और कहा. देख लो / यही अन्तिम अवसर / वह ग्वाटेमाला की लड़की / जिसने त्यागे थे प्राण / प्रेम की बेदी पर.

जर्मन कवि - मे.आयिम (अनुवाद- अमृत मेहता.)

विदा.---- क्या हों अन्तिम शब्द / सुखी रहो फ़िर मिलेंगे / कभी न कभी कहीं न कहीं / क्या हो अंतिम कारज / एक अन्तिम पत्र एक अंतिम फ़ोन-वार्तालाप / एक गीत मंद स्वर में? / क्या हो अंतिम इच्छा / माफ़ करना / भूलना नहीं मुझे/ प्यार करता हूं तुझे ? / क्या हो अंतिम विचार? / धन्यवाद? / धन्यवाद.

हंगरी कवि- - फ़ेरेंत्स यूहास. (अनुवाद- सुरेश सलिल)

सोना.---औरत अपने छीजते जाते बालों के जूड़े में / सधे हाथों सहेजती हुई / फ़िर एक चम्मच और पाव रोटी का एक एक गुम्मा / गिरा देते है उनके फ़ेले, मैले कुचैले हाथों में / हँसते हुए / उनकी सींकिया-सुर्ख घींचों का घेरा / भफ़ाती रकाबियों पर झुकता है / पवित्र जल पर गुलाब के फ़ूलों की भाँति / और सुर्ख गुलाब खिल उठते हैं / मसालेदार कुहासे में / चमक उठती है उनकी आँखों की पुतलियाँ. जैसे दस दुनियाएँ अपनी खुद की रोशनी में / अकबका गई हों / तिरने लग जाते हैं शोरबे में / आहिस्ता-आहिस्ता चक्कर लगाते / प्याज के सुनहरे छल्ले.

चेक कवि - मिरोस्लाव होबुल

हठधर्मिता का सिंड्रोम--- हवा में खड़ा है एक दैत्याकार वायुयान / पूँछ झुकाए / शहर के ऊपर / इतना भारी कि भर न पाए उड़ान / किसी सगर्भा व्याध पतिंगा की भाँति / अपने रहस्यमय निकास-मार्ग से / छतों को तोड़ता हुआ अपने मुर्दे / ऊपर जो घटित है / देखकर भी हम उसकी अनदेखी करते हैं / पेशियों की ऐंठन में कैसी तो हठधर्मिता है / हम से ऊपर मूर्तिवत हो गए हैं हम / संभव नहीं है कि अपनी गर्दने / पाँच डिग्री दायें या बांयें भी मोड़ सकें / राजनेताओं के रवैये की तरह / शहर के ढंग-ढर्रे से / पोशीदातौर पर चकित हैं हम /' कि, देखिए, किस तरह ढेर होती जा रही है / जागते रहने की शहर की कोशिशें

आईसलैण्ड कवि. - सिगुरदुर पालसन (अनुवाद कुसुम जैन)

(१) शीशे के भीतर दिखते हैं बड़े / वे आंसू, जिन्हें दिखना नहीं चाहिए / बाहर तनी पर टंगी चादरें / अब और नहीं बिछेगीं.

(२) जीवन और भी है / जो जिये जाते हैं / शुभकामनाएं और भी हैं / दी जाती हैं औरों को / याद नहीं अब / चाँद की वे किरणें / दिखाई देती थीं / जो बर्फ़ के आर-पार / सुबह की निस्तब्धता में बैठ / पी रहा हूं गर्म काफ़ी / कुछ अलग है यह चाँद / जिसे पहले कभी नहीं देखा / नया है इसका फ़ीकापन / जैसे दुकान से रोटी खरीदती औरत / मुझे नहीं जानती.

जर्मन कवि - बर्तोल्त ब्रेख्त (अनुवाद-अनिल पेटवाल)

जनरल तुम्हारा टैंक बड़ा शक्तिशाली है / ये जंगलों को तबाह करता है / और सैकड़ों लोगों को रौंद सकता है / मगर इसमें एक कमी है, / ये बिना चालक के काम नहीं कर सकता / तुम्हारे पास बड़े शक्तिशाली बम बरसाने वाले जहाज हैं. / ये तूफ़ानों से ज्यादा तेज उड़ सकते हैं / कई हाथियों को अपने भीतर ले जा सकते हैं / मगर इनमें एक कमी है / ये बिना मैकेनिक किसी काम के नहीं / जनरल, आदमी बड़े काम की चीज है / वो उड़ सकता है, और बड़ी आसानी से मार भी सकता है / मगर उसमें एक कमी है / वो सोच सकता है.

पुर्तगाल कवि जार्ज डे लिमा (1893-1953) (अनुवाद-पियूष दईया)

दिन उतरा नहीं है / मैंने देखा जहाजों को जाते और आते / मैने देखा दुर्दशा को जाते और आते / मैंने देखा चर्बीले आदमी को आग में / मैंने देखा सर्पीलाकारों को अंधेरे में / कप्तान, कहां है कांगो ? / कहा है संत ब्रैडानक टापू? / कप्तान कितनी काली है रात ! ऊँची नस्लवाले कुत्ते भौंकते हैं अंधेरे में / ओ ! अछःऊतों, देश कौन सा है / कौन सा है देश जिसकी तुम इच्छा रखते हो ? / मैंने लिया वनस्पतियों से जंगली शहद / मैंने लिया नमक पानियों से, मैणे रोशनी ली आकाश से / मेरे पास केवल काव्य है, तुम्हें देने को / बैठ जाऒ, मेरे भाइयों.

रुमानिया कवि- लूसीयन बलागा (1895-1961) (अनुवाद - पियूष दईया)

मैं नहीं पेरुंगा संसार की पिंजूलियां अजूबों को / और मैं नहीं मरुंगा / तर्कणा से / रहस्यों को जिन्हें मैं मिलता हूं अपने मार्ग के साथ साथ / फ़ूलों, आंखों, ओठों और कब्रों में / दूसरों की रोशनी / डुबोती है छिपे हुए गहरे जादू को / अथाह अंधेरे में / मैं बढ़ाता हूं संसार की पहेली / अपनी रोशनी के संग / जैसे चांद अपनी धवल शहतीरों संग / बुझाता नहीं बल्कि बढ़ाता है/ रात के झिलमिलाते रहस्यों को. मैं समृद्ध करता हूं गहराते क्षितिज को / महान राज की कंपकपियों से / वह सब जिसे जानना कठिन है / बन जाता है एक अरूझा बुझौवल / ऎन मेरी आंखों तले / क्योंकि बराबर प्यार करता हूं मैं / फ़ूलों, ओठों, आंखों और कब्रों को.

इराक कवि (१) टून्या मिखाइल (अनुवाद-गीत चतुर्वेदी)

(।) मैं हड़बड़ी में थी--- कल मैंने एक देश खो दिया / मैं बहुत हड़बड़ी में थी / मुझे पता ही नहीं चला / कब मेरी बाहों से फ़िसल कर गिर गया वह / जैसे किसी भुल्लकड़ पेड़ से गिर जाती है / कोई टूटी हुई शाख (लंबी कविता का अंश)

(ii) मोची–एक हुनरमंद मोची / अपनी पूरी उम्र / ठोंकता है कील / और चमकाता है चमड़े को / भांत-भांत के पैरों के लिए / पैर जो चलते हैं / पैर जो मारते हैं ठोकर / पैर जो लगाते हैं छलांग / पैर जो करते हैं अनुसरण / पैर जो दौड़ते हैं / पैर जो शामिल होते है भगदड़ में / पैर जो भहरा जाते हैं / पैर जो उछलते हैं / पैर जो यात्रा करते हैं ./ पैर जो शांत पड़े रहते हैं./ पैर जो कांपते हैं / पैर जो नाचते हैं / पैर जो लौटते है / जीवन मोची के हाथ में पड़ी / कुछ कीलें ही तो हैं.

कवि(२) सादी यूसुफ़ *(अनुवाद- अशोक पांडे)* (लंबी कविता का अंश)

अमेरिका, अमेरिका से..... हम बंधक नहीं है, अमेरिका / हम ईश्वर के सैनिक नहीं तुम्हारे सिपाही / हम निर्धन लोग हैं, हमारी है धरती वह जिसके देवता डुबा दिये गए हैं / बैलों के देवता / आगों के देवता / दुःखों के देवता, जो मिट्टी / और रक्त को गीत में गूंथ देते हैं / हम निर्धन लोग हैं, हमारा देवता है निर्धन / जो उभरता है किसानों की पसलियों से भूखा और चमकीला और ऊँचा उठाता है अपना सिए / अमेरिका हम मृतक हैं ./ आने दो अपने सिपाहियों को / जो भी एक मनुष्य का वध करे, उसे करने दो उसका उद्धार / हम डूबे हुए हैं, प्यारी लेडी ! / हम डूबे हुए लोग हैं / आने दो पानी को.

ईरान-डेनमार्क मूल की कवि- शीमा काल्बासी (अनुवाद अशोक पांडे)

अफ़गान की स्त्रियों के लिए- मैं टहल रही हूं काबुल की गलियों में / रंगी हुई खिड़कियों के पीछे / टूटे हुए दिल और टूटी हुई स्त्रियां हैं. / जब उनके परिवारों में कोई पुरुष नहीं बचा / रोटी के लिए याचना करतीं वे भूख से मर जाती हैं / एक जमाने की अध्यापिकाएं., चिकित्सिकाएं और प्रोफ़ेसर / आज बन चुकीं चलते-फ़िरते मकान भर / चन्द्रमा का स्वाद लिए बगैर / वे साथ लेकर चलती हैं, अपने शरीर, कफ़न सरीखे बुर्कों में (लंबी कविता के अंश)

इजरायल कवि- (१) आमीर ओ”र (अनुवाद अशोक पांडे)

भाषा कहती है- भाषा कहती है : भाषा के पहले / एक भाषा होती है, वहीं के घिसे हुए निशान होती है भाषा / भाषा कहती है: सुनो, अभी / आप सुनते हैं / गूंजता है कुछ / खामोशी ले लो और खामोश हो रहने का जतन करो / शब्द ले लो और बोलने की कोशिश करो / भाषा के परे, भाषा का एक घाव है / जिसमें से बहता जाता है, बहता जाता है संसार / भाषा कहती है : है, नहीं है, हैं / नहीं है, भाषा कहती है: मैं / भाषा कहती है चलो तुम्हें बोला जाए,/ चलो तुम्हें छुआ जाय, आ के बोलो ना,/ तुम बोल चुके हो.

कवि (२) **येहूदा आमीखाई (अशोक पांडे) (लंबी कविता का अंश)**

हिब्रू और अरबी भाषाएं लिखी जाती हैं पूर्व से पश्चिम की तरफ़ / लैटिन लिखी जाती है पश्चिम से पूर्व की तरफ़ / बिल्लियों जैसी होती हैं भाषाएं / आपको चाहिए कि उन्हें गलत तरीके से न सहलाएं / बादल आते हैं समुद्र से / रेगिस्थान से गर्म हवा / पेड़ झुकते हैं हवा में / और चारों तरफ़ हवाओं में पत्थर उड़ते हैं / चारों हवाओं तलक वे पत्थर फ़ेंकते हैं / इस धरती को फ़ेंकते है एक दूसरे पर / लेकिन धरती वापस गिरती है धरती पर.

तुर्की कवि आकग्यून आकोवा (अनुवाद गीत चतुर्वेदी) (लंबी कविता का अंश)

शांति क्या है मेरी जान---तुम जानती हो मेरी जान / शांति क्या होती है / क्या यह कोई पुल है जो एक परछाई पड़ते ही भहरा जाता है / कोई कंपनी है जो दिवालिया हो जाती है / इससे पहले कि उसके शेयर लोगों तक पहुंचे / क्या यह दो युद्धों के बीच का चायकालीन अवकाश है या / लोहार के सामने कहे गए उस बच्चे के आखिरी शब्द / जिसकी साइकिल खराब हो गई हो. / बताओ मेरी जान / शांति क्या वह खत है जो आईंस्टीन ने रूजवेल्ट को लिखा था / लाउसेन से मुस्तफ़ा कमाल के नाम आया टेलीफ़ोन है / या वह गली है जिसका कूड़ा / बुहार ले गया विज्ञान. *(लंबी कविता.)*

कवि(२) **नाजिम हिकमत**

इस तरह से– मैं खड़ा हूं बढ़ती रोशनी में, / मेरे हाथ भूखे, दुनिया सुन्दर / मेरी आंखे समेट नहीं पातीं पर्याप्त पेड़ों को / वे इतने उम्मीद भरे हैं, इतने हरे / एक धूप भरी राह गुजरती है शहतूतों से होकर, / मैं जेल-चिकित्सालय की खिड़की पर हूं / सुंधाई नहीं दे रही मुझे दवाओं की गंध / कहीं पास ही में खिल रहे होंगे कार्नेशन्स / यह इस बात की तरह है / गिरफ़्तार हो जाना अलग बात है / खास बात है आत्म समर्पण न करना.

चेकोस्लोवाकिया कवि - येरोस्लाव साइफ़र्त. (अनुवाद- अशोक पांडे)

गीत. बिदा के समय / हम हिलाते हैं रुमाल ./ हर रोज कोई चीज खत्म हो रही है / कोई सुन्दर चीज खत्म हो रही है / हवा को फ़ड़फ़ड़ाता है / लौटता हुआ हरकारा कबूतर / हम हमेशा लौट रहे होते हैं / उम्मीद के साथ या उसके बिना / जाओ, आँसू सुखा लो अपने / और मुस्कुराओ, अलबत्ता जल रही है अब भी तुम्हारी आँखें / हर रोज कोई चीज खत्म हो रही है / कुछ सुन्दर चीज खत्म हो रही है.

स्वीडिश कवि - टामस ट्रांसट्रामर (अनुवाद- किरण अग्रवाल)

सीमा के पीछे मित्रों को.– (१) मैंने तुम्हें इतनी होशियारी से लिखा / लेकिन जो मैं नहीं कह सका / भर गया और बड़ा हो गया गरम हवा के बैलून की तरह / और अन्ततः रत्रि आकाश से होकर दूर उड़ गया. (२) अब मेरा पत्र सेंसर के पास है / वह अपना दीपक बारता है / इसकी चमक में मेरे शब्द कूदते हैं / जैसे तार जाल में बंदर / इसको खड़खड़ाते हुए, अपने दांतों को अनावृत करने के लिए रुकते हुए.

सीरिया कवि - अली अहमद सईद. (अनुवाद- सुरेश सलिल)

मैं भौंचक हूं, मेरी वतन / हर बार मुझे तुम एक मुख्तलिफ़ शक्ल में नजर आते हो / अब मैं तुम्हें अपनी परेशानी पर ढो रहा हूं / अपने खून और अपनी मौत के दरमियान / तुम कब्रिस्तान हो या गुलाब ? / बच्चों जैसे नजर आते हो तुम मुझे, अपनी अंतड़ियां घसीटते / अपनी ही हथकड़ियों में गिरते-उठते / चाबुक की हर सटकार पर एक मुख्तलिफ़ चमढ़ी ओढ़ते / एक कब्रिस्तान या एक गुलाब ? / तुमने मेरा कत्ल किया, मेरे नग्मों का कत्ल किया / तुम कत्लेआम हो या इंकलाब ? / मैं भौंचक हूं मेरे वतन / हर बार तुम मुझे मुख्तलिफ़ शक्ल में नजर आते हो..

पाकिस्तान कवि अंजुम सलीमी (अनुवाद- प्रेम कपूर)

अधूरा आदमी हूं मैं.../ पूरा चांद मुझे समुंदर बना देता है / आंखें हजूम से सोहबत करती है , और मैं? / मुझे तनहाई ने बनाया है / रफ़ाकतें मुझे तोड़ देती है / मैं जमा हो रहा हूं / वक्त मुझे मिलने आयेगा / मैंने अपनी सरगोशियां दीवारों में रख दी है / खाली कमरा मुझ से भरा हुआ है / मुझे अभी दस्तक मत दो.

मारीशस कवि राज हीरामन

चाचा रामगुलाम---- ..चाचा थे, अब तुम चाचा न रहे / देश के तुम अब दादा बन गए / पिता तुम सिर्फ़ नवीन के थे / देश के अब राष्ट्रपिता बन गए / देश तो जंजीरों में थी बंधी / तुम ने एक-एक कड़ी थी तोड़ी / तुमने सबको आजाद किया / देश को तुमने आबाद किया.

(२) किस हवा में दम है- किसमें इतना दम है / जो इस दीप को बुझा सके /अमावस्या में यह जन्मा है / आंधियों से यह खेला है / तूफ़ानों में यह पला है / दिवाली में यह जला है / किसमें इतना दम है / जो इस दीप को बुझा सके.

न्यू जर्सी अमेरिक देवी नागरानी.

धीरे-धीरे शाम चली आई / भीनी-भीनी खुशबू छाई / इण्द्रधनुषी रंग मेरे मन का / मैं उसकी परछाइ.,छाई / धीरे-धीरे शाम चली आई / बूँद पड़े बारिश की सौंधी / महक मिट्टी की भाई,भाई / धीरे-धीरे शाम चली आई / भीगी मेरे मन की चादर / प्यास पर न बुझ पाई, पाई / धीरे धीरे शाम चली आई / कल तक जो बीज थे मैंने बोये / हरियाली अब छाई, छाई / आँगन में कुछ फ़ूल खिले हैं / रँगत मन को भाई, भाई / धीरे धीरे शाम चली आई / सुर

से सुर मिल राग यह मालकौंस रस बरसाई / धीरे धीरे शाम चली आई / सातरँगों की सरगम कारी / कोयल ने है गाई, गाई / धीरे धीरे शाम चली आई / महकाए मन मेरा देवी / भोर न ऐसी आई.

भारतीय कवि

कवि प्रदीप (रामचन्द्र द्विवेदी.)

आज हिमाचल की चोटी से फ़िर हम ने ललकरा है / दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिन्दुस्तान हमारा है. / जहां हमारा ताजमहल है और कुतुब-मीनारा है / जहां हमारे मन्दिर मस्जिद सिखों का गुरुद्वारा है / इस धरती पर कदम बढ़ाना अत्याचार तुम्हारा है / शुरु हुआ है जंग तुम्हारा जाग उठों हिन्दुस्तानी / तुम न किसी के आगे झुकना जर्मन हो या जापानी / आज सभी के लिए हमारा यही कौमी नारा है.

सुभद्रा कुमारी चौहान.

आ रही हिमालय से पुकार / है उदधि गरजता बार बार / प्राची पश्चिम भू नभ अपार / साब पूछ रहे हैं दिग-दिगन्त / वीरों का कैसा हो वसंत / फ़ूली सरसों ने दिया रंग / मधु लेकर आ पहुंचा अनंग / वधु वसुधा पुलकित अंग अंग / है वीर देश में किन्तु कंत / वीरों का कैसा हो वसंत / भर रही कोकिला इधर तान ./ मारु बाजे पर उधर गान / है रंग और रण का विधान / मिलने को आए आदि अंत / वीरों का कैसा हो वसंत / गलबाहें हों या कृपाण / चलचितवन हो या धनुषबाण / हो रसविलास या दलितत्राण / अब यही समस्या है दुरंत / वीरों का कैसा हो वसंत

संपतराव धरणीधर.

कुछ ऐसा होने वाला है / धरती का बेटा अब फ़सल चांद पे बोने वाला है./ सूरज के गर्वीले घोड़े अब अंतरिक्ष तक/ सिमित न रह पायेंगे / गांव-गांव और गली गली ये ऊर्जा से लादे जाएंगे./ पीठ पर अपने हम सब तक आएंगे जाएंगे / तुम देखोगे,बंजारे से ये जो घूम रहे हैं / सर पर अपने झिलमिल तारे/ये बुध ये शुक्र शनि / गढ़ने वाले हैं कल धरती की धानी चूनर पर / सलभे गोट किनारे. / कालिदास के मेघ अब गीत प्रणय के त्याग-अमन की बात सुनाने वाले हैं / बेकस मजलूमों का संदेश नया / इंद्रासन तक पहुंचाने वाले हैं / कि धन वैभव ये सारा का सारा / अब कुबेरों के महलों तक संचित रहना मुश्किल है./ क्योंकि राम गिरि की कुटिया में / वो बीमार यक्ष ज्यों का त्यों पीढ़ित है / पातालों से लेकर गहन व्योम के शिखरों तक / ये मेदिनी पुत्र वीर,एक नया धर्म / एक नया कर्म. एक नया विश्व / अपने लघु कंधो पर ढोने वाला है.

विष्णु खरे. **लालटेन जलाना.** ***(लंबी कविता के कुछ अंश)---***

-लालटेन जलाना उतना आसान बिल्कुल नहीं है / जितना उसे समझ लिया गया है / अव्वल तो चीन-चार संकरे कमरों वाले छोटे-से मकान में / कम से कम, तीन लालटेन की जरुरत पड़ती है / और रोज किसी को भी राजी करना मुश्किल है कि / वह तीनों को तैयार करे / और एक ही आदमी से हर शाम / यह काम करवा लेना तो असंभव है / घर में भले ही कोई औरत न हो / सिर्फ़ एक बाप और तीन संताने हों तो भी न्यायोचित ढंग से/ बारी-

बारी तीनों से लालटेन जलवाना कठिन नहीं / यह जरुर है कि जब दिया-बती की बेला आए / तो यह न मालूम हो के लालटेन पीपे या शीशी में तेल नहीं है. / और शाम को साढ़े छः बजे निकलना पड़े मिट्टी के तेल के लिए.

चंद्रकांत देवताले. माँ पर नहीं लिख सकता कविता. ---माँ के लिए सम्भव नहीं होगी मुझसे कविता / अमर चूँटियों का एक दस्ता / मेरे मस्तिस्क में रेंगते रहता है / मां वहाँ हर रोज चुटकी-दो चुटकी आटा डाल देती है /जब भी मैं सोचना शुरू करता हूं / यह किस तरह होता होगा / घट्टी पीसने की आवाज / मुझे घेरने लगती है./और मैं बैठे-बैठे दूसरी दुनियां में ऊँघने लगता हूं./जब कोई भी मां छिलके उतारकर / चने,मूंगफ़ली या मटर के दाने / नन्हीं हथेलियों पर रख देती है /तब मेरे हाथ मेरी जगह पर/ थरथराने लगते हैं /मां ने हर चीज के छिलके उतारे मेरे लिए / देह, आत्मा, आग और पानी तक के छिलके उतारे / और मुझे कभी भूखा नहीं सोने दिया /मैंने धरती पर कविता लिखी है / चन्द्रमा को गिटार में बदला है / समुद्र को शेर की तरह आकाश के पिंजरे में खड़ा कर दिया / सूरज पर कभी कविता लिख दूंगा / मां पर नहीं लिख सकता कविता.

स्व. डा.हुकुमपाल सिंह " विकल "

अनकहती कहती नदी.(लंबी कविता के कुछ अंश)----पानी पा सूखी जाती है / मुझमें बहती हुई नदी / सच कहने से कतराती है / सच-सच कहते हुई नदी / परम चिरन्तर थी जो नदी / अन्तस में गंगा सी बहती / घाट-घाट से प्राण बोध की / हरी भरी कविता सी कहती / आज वही नदिया पानी में / भूली पानी के छन्दों को / लगी तोड़ने पानी में ही / पय पानी से अनुबन्धों को / नेह और विश्वास किनारे जब से / अपने को बिखरा पाती है / अनकहती कहती नदी. / घाट घाट बैठे मछुआरे / सारे मर्यादाएं खोते / घाट घाट का पीकर पानी / पानी में वह पानी बोते / जो पानी अपने पानी को / पानी में ही आग लगाता / पानी लगे पानी मांगने पानी / पानी में वह प्यास उगाता / पानी के द्वारा पानी को / होते देख इस तरह पानी / पानी पानी हो जाती है / पानी रहती हुई नदी

चंद्रसेन **विराट** ***गंगाजल अपमानित होता है–*** **यदि आसूं को तुम पानी कहते हो / तो गंगाजल अपमानित होता है / पीड़ा ब्रहमा की आदि-भावना है / आसूं ही उसका पहला बेटा है / वह अंतरात्मा से धावित पोषित / उसने प्रभु का आशीष समेटा है / यदि भरी आंख पर मुस्कुराते हो तुम / सागर का दिल अपमानित होता है / सौंदर्य नयन से पी लो कब रोका / लेकिन तुम उसको मांसल परस न दो / लजवन्ती का अंकुर न मुरझ जाये / निरखो केवल छूले की हाविस न हो /. यदि दृष्टि वासनामय रखते हो तुम / दृग का काजल अपमानित होता है.**

स्व, भगवत रावत. चोर की चोरी / साहूकारी साहूकार की / दासता दास की / और अफसर का अफसरी / बेईमानी बेईमान की / दरिद्रता स्वाभिमानी की / ग़रीब की ग़रीबी / और तस्कर की तस्करी / दिन दूनी रात चौगुनी / फल फूल रही / कमाई कुकरम की / और अजगर की अजगरी / मज़े में हैं यहाँ सब / हे बाबा तुलसीदास / कविताई ससुरी अब / कहाँ जाय का करी।

संदर्भ- जबलपुर से प्रकाशित " पहल" पत्रिकाएँ. तथा

हल्द्वानी (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित "आधारशिला" के विश्व कविता अंक भाग १ और २

के आधार पर संग्रहित

7

कैलाश-मानसरोवर

कैलाश के स्मरण मात्र से शिवजी का दिव्य स्वरूप आँखों के सामने तैरने लगता है. यह वही स्थान है जहाँ देवों के देव महादेव अर्थात शिवशंकर माता पार्वतीजी एवं अपने गणों के साथ विराजते हैं.

इस पर्वत को ब्रह्माण्ड का एक्सिस भी कहा जाता है. आकाश और पृथ्वीके बीच का एक ऎसा बिंदु जहाँ चारों दिशाएं आपस में मिलती है. इसे मेरू पर्वत के नाम से भी जाना जाता है. अपने में अनेक रहस्यों को समेटे हुए यह पर्वत दुनियां का श्रेष्ठतम पवित्र स्थान है, जहाँ से अलौकिक शक्तियों का निरंतर प्रवाह बना रहता है. इसके शिखर पर ॐ की प्रतिध्वनि गूंजती रहती है. इस पवित्र पर्वत की ऊँचाई 6714 मीटर हैं. ऊँचाई में भले ही यह माउण्ट ऎवरेस्ट सरीखा नहीं है परन्तु इसकी आकृति एक विशाल शिवलिंग की तरह है. शायद यही कारण है कि यह हिन्दुओं के लिए अत्यन्त पवित्र और पूज्यनीय बना हुआ है. पर्वतों से बने शोड़षदल कमल की आकृति में घिरी यह शिवाकृति पूरे वर्ष भर बर्फ़ की सफ़ेद चादरों से घिरी रहती है. सिंधु, ब्रह्मपुत्र, सतलज और कर्णाली या घाघरा नदियों से यह घिरा हुआ है. इसकी तलहटी में सूर्य के आकार वाली मानसरोवर झील है, जो अपने दिव्य जल के लिए जानी जाती है. इसे क्षीरसागर भी कहा जाता है, जिसमें स्वयं नारायण अपनी पत्नि लक्ष्मी के संग निवास करते हैं. ऎसा माना जाता है कि शेषनाग वहाँ स्वयं उपस्थित रहकर भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी पर छाया बनाए रखते हैं. इस तीर्थ को सुवर्णपर्वत और रजतगिरि भी कहा जाता है. पौराणिक जनश्रुतियों के अनुसार शिव और ब्रह्मा आदि देवगण, मरीच आदि ऋषि एवं रावण, भस्मासुर आदि ने यहाँ कठोर तप किए थे. एक कथा के अनुसार लंका पति रावण ने शिव को प्रसन्न करने के लिए अपने शीश यहीं पर चढ़ाए थे. एक दूसरी कथा के अनुसार रावण ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए कैलाश पर्वत को अपने कंधे पर उठा लिया था. अपनी दिग्विजय यात्रा में पाण्डवों ने इस प्रदेश पर विजय प्राप्त की थी और युधिष्ठर को इस प्रदेश के राजा ने उत्तम घोड़े, सोना,रत्न और याक के पूँछ के बने काले और सफ़ेद चामर भेंट में दिए थे. यह वही स्थान है जहाँ जगतगुरु शंकराचार्यजी ने अन्तिम साँसें ली थीं.

जैन धर्म में भी इस स्थान का विशेष महत्व है. वे कैलाश को अष्टापद भी कहते हैं. कहते हैं कि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ने इसी स्थान में निर्वाण प्राप्त किया था. बौद्ध जनश्रुति के अनुसार कैलाश पृथ्वी के मध्य भाग में स्थित है. उसकी उपत्यका में रत्नखचित कल्पवृक्ष है. इसे पृथ्वी में पर अवस्थित स्वर्ग भी कहा गया है.

कैलाश -मानसरोवर जाने के अनेक मार्ग हैं, किंतु उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा से अस्ककोट, खेल,गर्विअंग, लिपूलेह,खिंड, तलकाकोट होकर जाने वाला मार्ग अपेक्षाकृत सुगम है. यह भाग 544 किमी(338 मील) लंबा है और इसमें अनेकों उतार-चढ़ाव है. जाते समय सरलकोट तक 70 किमी (44 मील) की चढ़ाई है, उसके आगे 74 किमी (46 मील) उतराई है. मार्ग में अनेक धर्मशालाएं और आश्रम हैं, जहाँ यात्री ठहर सकता है. गर्विअंग में आगे की यात्रा के निमित्त याक, खच्चर, कुली आदि मिलते हैं. तकलाकोट तिब्बत स्थित पहला ग्राम है, जहाँ प्रति वर्ष ज्येष्ठ से कार्तिक तक बड़ा बाजार लगता है. तकलाकोट से तारचेन जाने के मार्ग में ही मानसरोवर मिलता है.

कैलाश की परिक्रमा तारचेन से आरंभ होकर वहीं समाप्त होती है। तकलाकोट से 40 किमी (25 मील) पर मंधाता पर्वत स्थित गुर्लला का दर्रा 4,938 मीटर (16,200 फुट) की ऊँचाई पर है। इसके मध्य में पहले बाइर्ं ओर मानसरोवर और दाइर्ं ओर राक्षस ताल है। उत्तर की ओर दूर तक कैलाश पर्वत के हिमाच्छादित धवल शिखर का रमणीय दृश्य दिखाई पड़ता है। दर्रा समाप्त होने पर तीर्थपुरी नामक स्थान है जहाँ गर्म पानी के झरने हैं। इन झरनों के आसपास चूनखड़ी के टीले हैं। प्रवाद है कि यहीं भस्मासुर ने तप किया और यहीं वह भस्म भी हुआ था। इसके आगे डोलमाला और देवीखिंड ऊँचे स्थान है, उनकी ऊँचाई 5,630 मीटर (18,471 फुट) है। इसके निकट ही गौरीकुंड है। मार्ग में स्थान स्थान पर तिब्बती लामाओं के मठ हैं।

यात्रा में सामान्यत: दो मास लगते हैं और बरसात आरंभ होने से पूर्व ज्येष्ठ मास के अंत तक यात्री अल्मोड़ा लौट आते हैं। इस प्रदेश में एक सुवासित वनस्पति होती है जिसे कैलास धूप कहते हैं। लोग उसे प्रसाद स्वरूप लाते मानसरोवर झील (दाएं) इसके पश्चिम में राक्षसताल तथा उत्तर में कैलाश पर्वत है. (उपग्रह से लिया गया चित्र,)

सृष्टी के आरंभ में ब्रह्माजी ने केवल एक पुराण की रचना की थी, जिसमें एक अरब श्लोक थे. अपनी विशालता के चलते इसे पढ़ने में कठिनाइयां होती थी. अतः इस पुराण को सरल तरीके से समझाने के लिए **महर्षि वेदव्यास** ने इस विशाल पुराण को 18 पुराणों में विभक्त करते हुए इसे आसान बना दिया.

अठारह पुराणों के नाम तथा उनमें लिखे गए श्लोकों की संख्या निम्नानुसार हैं.

(1)**ब्रहमपुराण**- दस हजार (2) **पद्म पुराण**-55 हजार (3) **विष्णु पुराण**-23 हजार (4) **शिव पुराण**-24 हजार (5) **भागवत पुराण**-18 हजार (6) **नारद पुराण**-25 हजार (7) **मार्कण्डेउ पुराण**-9 हजार (8) **अग्नि पुराण**- 15,400 (9) **भविष्य पुराण**- 14,500 (10) **ब्रहमवैवर्त पुराण**- 18 हजार (11) **लिंग पुराण**-11 हजार (12) **वराह पुराण**-24 हजार (13) **स्कंद पुराण**- 81 हजार एक सौ (14) **वामन पुराण**- 10 हजार (15) **कुर्म पुराण**-17 हजार (16) **मत्स्य पुराण**-14 हजार (17) **गरुड़ पुराण**-19 हजार (18) **ब्रहमाण्ड पुराण**-12 हजार.

इस तरह मत्स्य पुराण **सोलहवां** पुराण है जिसमें 290 अध्याय तथा 14 हजार श्लोक हैं. इस ग्रंथ में मत्स्य अवतार की कथा के अलावा तालाब, बागीचा, कुआं, बावड़ी, पुष्करिणी, देव मन्दिर की प्रतिष्ठा, वृक्ष लगाने की विधि, भूगोल का विस्तृत वर्णन, ऐरावती नदी का वर्णन, हिमालय की अद्‌भुत छटा का एवं **कैलाश पर्वत का वर्णन**, गंगा जी की सात धाराओं के वर्णन के साथ ही राजा पुरुरवा की रोचक कथा भी शामिल है..

आइए-इसी क्रम में हम **मत्स्यपुराण** में वर्णित कैलाश-मानसरोवर के बारे में विस्तार से जानकारियों प्राप्त करते चलें-

तस्याश्रमस्योत्तरतस्त्रिपुरारिवेषेवितः * नानारत्नमयैः श्रृंगै कल्पद्रुमसमन्वितैः मध्ये हिमवतः पृष्ठे कैलासो नाम पर्वतः * तस्मिन निवसति श्रीमान कुबेरः सह गुह्यकैः

अपस्रोऽनुगतो राजा मोदते ह्यलकाधिपः * कैलाशपादसम्भूतं पुण्यं शीतजलं शुभम

मन्दोदकं नाम सरः पायस्तु दधिसंनिभम * तस्मात प्रवहते दिव्या नदीः मन्दाकिनी शुभा

दिव्यं च नन्दनं तत्र तस्यास्तीरे महद्‌वनम * प्रागुत्तारेण कैलासाद दिव्यं सौगन्धिकं गिरिम

सर्वधातुमायं दिव्यं सुवेलं पर्वतं प्रति * चन्द्रप्रभो नाम फ़िरिः यः शुभ्रो रत्नसंनिभः

तत्समीपे सरो दिव्यमच्छोदं नाम विश्रुतम * तस्मात प्राभवते दिव्या नदी ह्यच्छोदिका शुभा

तस्यास्तीरे वनं दिव्यं महच्चैत्ररथं शुभम * तस्मिन गिरौ निवसति मणिभ्रदः सहानुगः

यक्षसेनापतिः शूरो गुह्यकैः परिवारितः * पुण्या मन्दाकिनी नाम नदी ह्यच्छोदिका शुभा

महीमण्डलमध्ये तु प्रविष्ठा सा महोदधिम

उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत के पृष्ठ-भाग के मध्य में कैलाश नामक पर्वत स्थित है. उस पर त्रिपुरासुर के संहारक शंकरजी निवास करते हैं. उनके शिखर नाना प्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं तथा उस पर कल्पवृक्ष शोभा पा रहे हैं. उस पर्वत पर श्रीमान कुबेर गुह्यकों के साथ निवास करते हैं. इस प्रकार अलकापुरी के अधीश्वर राजा कुबेर अप्सराओं द्‌वारा अनुगमन किए जाते हुए आनन्द का अनुभव करते हैं. कैलाश के पाद (उपत्यका) से एक मन्दोदक नामन सरोवर प्रकट हुआ है, जिसका जल बड़ा पवित्र, निर्मल एवं शीतल है. उसका जल दही के समान उज्ज्वल है,. उसी सरोवर से मंगलमयी दिव्य मन्दाकिनी नदी प्रवाहित होती है. वहां उस नदी के तट पर नन्दन नामक दिव्य एवं महान वन है. कैलाश की पूर्वोत्तर दिश में चन्द्रप्रभ नामक पर्वत है, जो रत्न-सद्दश चमकदार है. वह सभी प्रकार की धातुओं से विभूषित तथा अनेकों प्रकार की सुगन्ध से सुवासित दिव्य सुबेल पर्वत तक फ़ैला हुआ है. इसके निकट अच्छोद (अच्छावत) नाम से विख्यात एक दिव्य सरोवर है, उससे अच्छोदिका नाम की कल्याणमयी दिव्य नदी उद्‌भूत हुई है. उस नदी के तट पर चैत्ररथ नामक दिव्य एवं सुन्दर महान वन है. उस पर्वत पर शूरवीर्सेनापति मणिभद्र गुह्यकों से घिरे हुए अपने अनुयायियों के साथ निवास करते हैं. पुण्यमती मन्दाकिनी तथा कल्याणक्रिणी अच्छौदा- ये दोनों नदियां पृथ्वी-मण्डल के मध्यभाग से प्रवाहित होती हुई महासागर में मिली है

कैलासदक्षिणॆ प्राच्यां सर्वौषधिं गिरिम

मनःशिलामयं दिव्यं सुवेलं पर्वतं प्रति * लोहोतो हेमश्रृंगस्तु गिरिः सूर्यप्रभो महान

तस्य पादे महद दिव्यं लोहितं सुमहत्तरः * तस्मात प्रभवते पुण्य़ो लौहित्यस्च नदो महान

दिव्यारण्यं विशोकं च तस्य तीरे महद वनम* तस्मिन गिरौ निवसति याक्षो मणिधरो वशी

सौम्यैः सुधार्मिकैश्चैव गुह्यकैः परिवारितः * कैलासात पश्चिमोदीच्यां कुकुद्द्द्मानौषधीगिरिः
कुकुद्मिति च रुद्रस्य उत्पत्तिश्च कुकुद्मिनः * तदंजनं त्रैककुदं शैलं त्रिककुदं प्रति
सर्वधातुमयस्तत्र सुमहान विध्युतो गिरिः * तस्य पादे माहद दिव्यं मानसं सिद्धसेवितम
तस्मात प्रभवते पुण्या सरयूर्लोकपावनी * यस्यास्तीरे वनं दिव्यं वैभ्राजं नाम विश्रुतम
कुबेरानुचरस्तस्मिन प्रद्देतितनयो वशी * ब्रह्मधाता निवसति राक्षसोऽनन्तविक्रमः

कैलाश के दक्षिण-पूर्व दिशा में लाल वर्णवाला हेमश्रृंग नामक एक विशाल पर्वत है. वह दिव्य सुवेल पर्वत तक फ़ैला हुआ है. उसकी कान्ति सूर्य के समान है. यह मंगलाप्रद पर्वत सभी प्रकार की औषधियों से सम्पन्न तथा मैनशिल नामक धातु से परिपूर्ण है. उसके पाद-प्रांत में एक विशाल दिव्य सरोवर है, जिसका नाम लोहित है. वह पुष्पमय लोहित्य (ब्रह्मपुत्र) नामक महान नद का उद्गमस्थल है. उस नद के तट पर विशोक नामक एक दिव्य एवं विस्तृत वन है. उस पर्वत पर मणिधर नामक यक्ष इन्द्रियों को वश में करके परम धार्मिक एवं सौम्य-स्वाभाव वाले गुह्यकों के साथ निवास करता है. कैलाश की पश्चिमोत्तर दिशा में ककुदामान नामक पर्वत है, जिस पर सभी प्रकार की औषधियां सुलभ हैं. यह अंजन-जैसा काला तथा तीन शिखरों से सुशोभित है. उस कुकुदमान पर्वत पर भगवान रुद्र के गण कुकुदमी (नन्दीकेश्वर) की उत्पत्ति हुई है, वहीं समस्त धातुओं से सम्पन्न वैध्युत नामक अत्यन्त महान पर्वत है, जो त्रिककुद पर्वत तक विस्तृत है. उसके पाद-प्रांत में सिद्धों द्वारा सेवित एक महान दिव्य मानस सरोवर है. उस सरोवर से लोकापावनी पुण्य-सलिला सरयू निकली हुई है, जिनके तट पर (वरुणका) वैभ्राज नामक प्रसिद्ध दिव्य वन है. उस वन में प्रहेतिका पुत्र ब्रह्मधाता नामक राक्षस निवास करता है. वह जितेन्द्रिय, अनन्तपराक्रमी और कुबेर का अनुचर है.

कैलाश की पश्चिम दिशा में संपूर्ण औषधियों से संपन्न वरुण नामक दिव्य पर्वत है. यह पर्वतश्रेष्ठ सुवर्ण आदि धातुओं से विभूषित, भगवान शंकर का प्रियपात्र, शोभाशाली, स्वर्ण-सद्दश, चमकीला और स्वर्णमयी दिव्य शिलाओं के संपन्न है. वह अपने स्वर्ण-सरीखे चमकदार सैकड़ों शिखरों से आकाश को छूता हुआ-सा दीख पड़ता है. वहीं श्रृंगवान नाम का एक महान दिव्य पर्वत है, जो समृद्धिशाली एवं दुर्गम है. उस पर्वत पर धूमलोचन भगवान शिव निवास करते हैं. उस पर्वत के पाद-प्रांत में शैलोदका नामकी नदी प्रवाहित होती है. उसे चक्षुकी भी कहते हैं. वह उन दोनों पर्वतों के बीच से बहती हुई पश्चिम-सागर में जा मिली है. कैलाश के उत्तर दिशा में हिरण्यश्रृंग नामका अत्यन्त विशाल पर्वत है, जो हरिताल से परिपूर्ण पर्वत श्रेष्ठ गौरतक फ़ैला हुआ है. इस कल्याणकारी पर्वत पर दिव्य औषधियां प्राप्त होती है. इसके पादप्रान्त में बिन्दुसर नामक अत्यन्त रमणीय़ दिव्य सरोवर है, जो सुवर्ण के समान बालुका से युक्त है. यहीं पर राजर्षि भगीरथ ने वर्षों तक तप किया था. इसलिए

त्रिपथगा(गंगादेवी सर्वप्रथम यहीं प्रतिष्ठित हुई थीं और सोम पर्वत के पाद से निकलकर सात भागों में विभक्त हो गयीं. उस सरोवर के तट पर अनेकों मणिमय यज्ञस्तम्भ तथा स्वर्णमय विमान शोभा पा रहे थे. वहां देवताओं के साथ इन्द्र ने यज्ञों का अनुष्ठन कर सिद्धि लाभ किया था. वहाँ दिव्य छायापठ तथा नक्षत्रों का मंडल विध्यमान है. वहां त्रिपथगा गंगादेवी रात में चमकती हुई दीख पड़ती है.

आगे के श्लोकों में गंगाजी का भगीरथ के पीछे-पीछे जाना, रास्ते में पड़ने वाले स्थानों के बीच से गुजरते हुए, उन स्थानों को पवित्र एवं पुण्यमय बनाती हुई वह उस स्थान पर जा पहुंचती है, जहां उसके पूर्वज ऋषि के श्राप से जलकर भस्म हो गए थे. उन सभी को मोक्ष प्रदान करते हुए वह समुद्र मे पहुंच कर लीन हो जाती है.

किसी समय कैलाश-मानसरोवर की यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालुओं को अपनी शारिरीक क्षमता को सिद्ध करने लिए डाक्टर से प्रमाण-पत्र लेना पड़ता था और आवश्यक कागजाद तैयार कर चीन से वीजा लेना होता था. लेकिन भारत के ऊर्जावान प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदीजी ने चीन से अपनी राजनीतिक सुझ-बूझ से इसे आसान बना दिया है और एक सरलतम रास्ता खोज निकाला जिस पर चलते हुए कैलाश-मानसरोवर की यात्रा सुगमतापूर्वक की जा सकती है.

हजारों साल पहले रचे गए इस पुराण में वर्णित नदियों के नाम, उनके बहने की दिशा, रास्ते में पड़ने वाले जनपदों के नाम, वहां के संपूर्ण इतिहास की बारीक-बारीक जानकारियों हमें प्राप्त होती है. निःसन्देह इन अद्भुत पुराणों का पठन-पाठन हम भारतीयों को जरुर करना चाहिए. इसे पढ़ते हुए यह तो स्पष्ट होता है कि उन दिनों भारत अपने ज्ञान और कौशल में कितना निपुण था. तभी तो वह जगतगुरु कहला पाया.

बौद्ध धर्म में भी इसे पवित्र माना गया है। एसा कहा जाता है कि रानी माया को भगवान बुद्ध की पहचान यहीं हुई थी।

जैन धर्म तथा तिब्बत के स्थानीय बोनपा लोग भी इसे पवित्र मानते हैं।मानसरोवर झील और राक्षस झील, ये दोनों झीलें सौर और चंद्र बल को प्रदर्शित करते हैं जिसका सम्बन्ध सकारात्मक और नकारात्मक उर्जा से है। जब इन्हें दक्षिण की तरफ से देखते हैं तो एक स्वस्तिक चिन्ह वास्तव में देखा जा सकता है।कैलाश पर्वत और उसके आस पास के बातावरण पर अध्यन कर रहे वैज्ञानिक ज़ार निकोलाइ रोमनोव और उनकी टीम ने तिब्बत के मंदिरों में धर्म गुरुओं से मुलाकात की उन्होंने बताया कैलाश पर्वत के चारों ओर एक अलौकिक शक्ति का प्रवाह होता है जिसमे तपस्वी आज भी आध्यात्मिक गुरुओं के साथ टेलिपेथी संपर्क करते है।पुराणों के अनुसार यहाँ शिवजी का स्थायी निवास होने के कारण इस स्थान को 12 ज्येतिर्लिंगों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। कैलाश बर्फ़ से सटे 22,028 फुट ऊँचे शिखर और उससे लगे मानसरोवर को ‘कैलाश मानसरोवर तीर्थ’ कहते है और इस प्रदेश को मानस खंड कहते हैं। कैलाश-मानसरोवर उतना ही प्राचीन है, जितनी प्राचीन हमारी सृष्टि है। इस अलौकिक जगह पर प्रकाश

तरंगों और ध्वनि तरंगों का समागम होता है, जो 'ॐ' की प्रतिध्वनि करता है।पांडवों के दिग्विजय प्रयास के समय अर्जुन ने इस प्रदेश पर विजय प्राप्त किया था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में इस प्रदेश के राजा ने उत्तम घोड़े, सोना, रत्न और याक के पूँछ के बने काले और सफेद चामर भेंट किए थे। इस प्रदेश की यात्रा व्यास, भीम, कृष्ण, दत्तात्रेय आदि ने की थी। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक ऋषि मुनियों के यहाँ निवास करने का उल्लेख प्राप्त होता है। कुछ लोगों का कहना है कि आदि शंकराचार्य ने इसी के आसपास कहीं अपना शरीर त्याग किया था।गर्मी के दिनों में जब मानसरोवर की बर्फ़ पिघलती है, तो एक प्रकार की आवाज़ भी सुनाई देती है। श्रद्धालु मानते हैं कि यह मृदंग की आवाज़ है। मान्यता यह भी है कि कोई व्यक्ति मानसरोवर में एक बार डुबकी लगा ले, तो वह 'रुद्रलोक' पहुंच सकता है। कैलाश पर्वत, जो स्वर्ग है जिस पर कैलाशपति सदाशिव विराजे हैं, नीचे मृत्यलोक है, इसकी बाहरी परिधि 52 किमी है।मानसरोवर पहाड़ों से घिरी झील है, जो पुराणों में 'क्षीर सागर' के नाम से वर्णित है। क्षीर सागर कैलाश से 40 किमी की दूरी पर है व इसी में शेष शैय्या पर विष्णु व लक्ष्मी विराजित हो पूरे संसार को संचालित कर रहे है।कैलाश पर्वत को 'गणपर्वत और रजतगिरि' भी कहते हैं। मान्यता है कि यह पर्वत स्वयंभू है। कैलाश पर्वत के दक्षिण भाग को नीलम, पूर्व भाग को क्रिस्टल, पश्चिम को रूबी और उत्तर को स्वर्ण रूप में माना जाता है। यह हिमालय के उत्तरी क्षेत्र में तिब्बत प्रदेश में स्थित एक तीर्थ है - जो चार धर्मों तिब्बती धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और हिन्दू का आध्यात्मिक केन्द्र है।

इसकी परिक्रमा का महत्त्व कहा गया है। कैलाश पर्वत कुल 48 किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। कैलास परिक्रमा मार्ग 15500 से 19500 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। मानसरोवर से 45 किलोमीटर दूर तारचेन कैलास परिक्रमा का आधार शिविर है। कैलाश की परिक्रमा कैलाश की सबसे निचली चोटी तारचेन से शुरू होती है और सबसे ऊंची चोटी डेशफू गोम्पा पर पूरी होती है।

घोडे और याक पर चढ़कर ब्रह्मपुत्र नदी को पार करके कठिन रास्ते से होते हुये यात्री डेरापुफ पहुंचते हैं। जहां ठीक सामने कैलास के दर्शन होते हैं। यहां से कैलाश पर्वत को देखने पर ऐसा लगता है, मानों भगवान शिव स्वयं बर्फ़ से बने शिवलिंग के रूप में विराजमान हैं। इस चोटी को 'हिमरत्न' भी कहा जाता है।

ड्रोल्मापास तथा मानसरोवर तट पर खुले आसमान के नीचे ही शिवशक्ति का पूजन भजन करते हैं। यहां कहीं कहीं बौद्धमठ भी दिखते हैं जिनमें बौद्ध भिक्षु साधनारत रहते हैं। दर्रा समाप्त होने पर तीर्थपुरी नामक स्थान है जहाँ गर्म पानी के झरने हैं। इन झरनों के आसपास चूनखड़ी के टीले हैं। कहा जाता है कि यहीं भस्मासुर ने तप किया और यहीं वह भस्म भी हुआ था।

इसके आगे डोलमाला और देवीखिंड ऊँचे स्थान है। ड्रोल्मा से नीचे बर्फ़ से सदा ढकी रहने वाली ल्हादू घाटी में स्थित एक किलोमीटर परिधि वाला पन्ने के रंग जैसी हरी आभा वाली झील, गौरीकुंड है। यह कुंड हमेशा बर्फ़ से ढंका रहता है, मगर तीर्थयात्री बर्फ़ हटाकर इस कुंड के पवित्र जल में स्नान करना नहीं भूलते। साढे सात किलोमीटर परिधि तथा 80 फ़ुट गहराई वाली इसी झील में माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए घोर तपस्या की थी।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह जगह कुबेर की नगरी है। यहीं से महाविष्णु के करकमलों से निकलकर गंगा कैलाश पर्वत की चोटी पर गिरती है, जहाँ प्रभु शिव उन्हें अपनी जटाओं में भर धरती में निर्मल धारा के रूप में प्रवाहित करते हैं।

इस प्रकार यह झील सर्वप्रथम भगवान ब्रह्मा के मन में उत्पन्न हुआ था। इसी कारण इसे 'मानस मानसरोवर' कहते हैं। दरअसल, मानसरोवर संस्कृत के मानस (मस्तिष्कद्ध) और सरोवर (झील) शब्द से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ होता है- मन का सरोवर। मान्यता है कि ब्रह्ममुहुर्त (प्रातःकाल 3-5 बजे) में देवतागण यहां स्नान करते हैं।

ऐसा माना जाता है कि महाराज मानधाता ने मानसरोवर झील की खोज की और कई वर्षों तक इसके किनारे तपस्या की थी, जो कि इन पर्वतों की तलहटी में स्थित है। बौद्ध धर्मावलंबियों का मानना है कि इसके केंद्र में एक वृक्ष है, जिसके फलों के चिकित्सकीय गुण सभी प्रकार के शारीरिक व मानसिक रोगों का उपचार करने में सक्षम हैं। हिन्दू उसे 'कल्पवृक्ष' की संज्ञा देते हैं।

झील लगभग 320 किलोमीटर के क्षेत्र में फैली हुई है। इसके उत्तर में कैलाश पर्वत तथा पश्चिम में रक्षातल झील है। पुराणों के अनुसार मीठे पानी की मानसरोवर झील की उत्पत्ति भगीरथ की तपस्या से भगवान शिव के प्रसन्न होने पर हुई थी। ऐसी अद्भुत प्राकृतिक झील इतनी ऊंचाई पर किसी भी देश में नहीं है। पुराणों के अनुसार शंकर भगवान द्वारा प्रकट किये गये जल के वेग से जो झील बनी, उसी का नाम 'मानसरोवर' है।

राक्षस ताल लगभग 225 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र, 84 किलोमीटर परिधि तथा 150 फुट गहरे में फैला है। प्रचलित है कि राक्षसों के राजा रावण ने यहां पर शिव की आराधना की थी। इसलिए इसे राक्षस ताल या रावणहृद भी कहते हैं। एक छोटी नदी गंगा-चू दोनों झीलों को जोडती है।

8---- खिलवाड़ न करें धरती की चुम्बकीय शक्ति से

परमात्मा,ईश्वर,ब्रह्म, परमपिता आदि कई नामों से पुकारी जाने वाली एक अनादि शक्ति का प्रकाश और उसकी प्रेरणा से ही इस जगत को और जगत के पदार्थों को स्फुरण मिल रहा है. उसी के प्रभाव से सृष्टि के विभिन्न पदार्थों का ज्ञान, कार्य एवं सौन्दर्य प्रतिभासित होता है. वही अपने समग्र रूप में अवतीर्ण होता रहता है और सत्य रूप प्रतिष्ठित होता रहता है. साधक जब विराट 'जगत' के रूप में परमात्मा का दर्शन करता है, उन्हीं की चेतना को सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा, तारागण आदि में प्रकाशित होते देखता है, तो उसे सत्य का दर्शन होता है, जगत और अध्यात्म का स्थूल और सूक्ष्म का, दृष्य और तत्व का जहाँ परिपूर्ण सामंजस्य होता है, वहीं सत्य की परिभाषा पूर्ण होती है और यह सत्य जब जीवन साधना का आधार बनता है, तब जगत की प्रेरक और सर्जन शक्ति का परिचय प्राप्त होता है.

अपनी इस धरती की समर्थता एवं सम्पदा को पर्यवेक्षकों ने अनेक दृष्टियों से देखा और अनेक कसौटियों पर परखा है. उन निष्कर्शों में एक यह भी है कि धरती एक विशालकाय चुम्बक है. उसकी संरचना भर रासायनिक पदार्थों से हुई है. हलचलों के मूल में उसकी चुम्बकीय क्षमताएँ ही विभिन्न स्तर की हलचलें करतीं और एक से एक बढे-चढे चमत्कार प्रस्तुत करती है.

अणु शक्ति में परमाणु का नाभिक ही ऊर्जा-भण्डार माना जाता है. यह संचय धरती के प्रचण्ड चुम्बकत्व का ही एक घटक है. जीवाणुओं के भीतर जो सचेतन क्षमता काम करती है, उसे भी संव्याप्त चेतना का अंशधारी कहा गया है. यह समर्थता और चेतना दोनों ही उस चुम्बकत्व की दो गंगा-जमुना धाराएँ है, जिनके संयोग से धरती का वातावरण सौंदर्य, वैभव और उल्लास से भरा पूरा बना रहता है.

लन्दन विश्वविद्यालय के किंग्स कालेज के प्रोफ़ेसर. जान टेलर और फ्रान्सिस हिचिंग ने मिलकर एक पुस्तक लिखी–"अर्थ मैजिक". उनमें उन्होंने यह सिद्ध किया है, कि धरती पर दृष्टिगोचर होने वाले अगणित हलचलें जादू, चमत्कार जैसी प्रतीत होती है. उनके मूल में पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति ही काम करती है. यदि यह घटने-बढने लगे तो उसके परिणाम प्रस्तुत व्यवस्था में असन्तुलन उत्पन्न करेंगे और भयावह परिणाम उत्पन्न होंगे.

वैज्ञानिक शोध संस्था ' नासा" ' के अन्तर्गत चलने वाले अनुसन्धान केन्द्रों ने प्रमाणित किया है कि धरती पर कारणवश होने वाले चुम्बकीय परिवर्तन ही सृष्टि के इतिहास क्रम में अनोखे और अप्रत्याशित अध्याय जोडते रहे हैं. भविष्य में यदि कभी कोई असाधारण उथल-पुथल होगी तो उसका मूलभूत कारण एक ही होगा--*धरती के चुम्बकीय प्रवाह में उथल-पुथल, उलट-पलट.*

समग्र पृथ्वी तो एक विशाल चुम्बक है ही, किन्तु उसका उभार क्षेत्र विशेष में न्यूनाधिक भी पाया जाता है. इसका प्रभाव उन स्थानों के पदार्थो और प्राणियों पर पडता है. उनकी आकृति और प्रकृति में जो अन्तर पाया जाता है उसमें अन्य कारण उतने प्रबल नहीं होते, जितने के स्थान-स्थान पर पाए जाने वाले चुम्बकत्व के दबते-उभरते प्रवाह. इस दृष्टि से वे विभिन्न प्रयोजनों के लिए विभिन्न क्षेत्रों की उपयोगिता सिद्ध करते हैं. जो कार्य एक स्थान पर नहीं हो सकत या कठिन पडता है, वह दूसरे उपयुक्त स्थान पर स्वल्प प्रयास से ही सरलतापूर्वक सम्पन्न हो सकता है.

पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति क्षेत्र विशेष के आधार पर ध्रुव प्रदेशों में सबसे अधिक पायी जाती है और "रिओडी-जानीरो" क्षेत्र मे न्यून्तम आँकी गई है. विलक्षणता एक और भी है कि यह सदा किसी स्थान पर एक जैसी नहीं रहती, उसमें कारणवश परिवर्तन होता रहता है.

पिछले दिनों बारमूडा क्षेत्र में अनेक अद्भुत घटनाएँ घटी हैं. उस क्षेत्र से गुजरने वाले जलयान एवं वायुयान इस प्रकार अदृष्य हुए हैं कि बहुत खोजने पर भी उनका कुछ भी अता-पता न मिल सका. विज्ञजनों का कहना है कि उस क्षेत्र में चुम्बकीय विलक्षणता ही ऎसे उपद्रवों के लिए उत्तरदायी है. इस दृष्टि से वह क्षेत्र सर्वथा अनोखा और विलक्षण है. वहाँ चित्र-विचित्र प्रकार के चुम्बकीय भँवर पडते रहते है.

प्रसिद्ध डच भूगर्भ शास्त्री प्रो. सोल्को.डब्ल्यु.ट्राम्प ने "साइकिल फ़िजिक्स" पुस्तक में विभिन्न प्रयोग परीक्षण करके यह लिखा है कि पृथ्वी अगणित विशेषताओं और धाराओं से भरे-पूरे चुम्बकत्व से भरी पूरी है. वैज्ञानिक उपलब्धियों में प्रकारान्तर से इसी क्षमता से स्त्रोतों को खोजा और प्रयोग में लाया गया है. इसका समर्थन "फ़्रेंच एटामिक एनर्जीकमीशन" के सदस्य "इकोले नारमल" और अमेरिका के सुरक्षा-विभाग एवं अर्कन्सास विश्वविद्यालय के " डा.जाबोज हारवलिक" ने भी किया है. डा.आबोज" अमेरिकन सोसायटी आफ़ डाउसर्स" के प्रमुख हैं.

अमेरिका के "सिविल ऎवियेशन बोर्ड" की 'ऎक्सीडेन्ट इन्वेस्टीगेशन रिपोर्ट' में बतलाया गया है कि बारमूडा क्षेत्र में जाने वाले हवाई या जल जाहज के चालकों को कभी-कभी दुर्घटना का पूर्वाभास हो जाता है. डा.जाबोज हारवलिक ने अनुसन्धान करके पता लगाया है कि इस स्थान विशेष से गुजरने पर मस्तिष्क की 'पीनियल ग्रन्थि' पर चुम्बकीय परिवर्तन का गहरा प्रभाव पडता है. इस परिवर्तन से 'सीरोटोनिन' नामक हार्मोन पैदा होता है, जो मानसिक विक्षिप्तता पैदा कर देता है.

बारमूडा क्षेत्र अटलांटिक महासागर के मध्य आता है. 'एडगर केयसी' नामक प्रसिद्ध व्यक्ति, जो 'स्लीपिंग प्रोफ़ेट' के नाम से जाने जाते थे, का कहना है–'ईसा से 50,000 वर्ष पूर्व अटलांटिक महासागर में एक बडा भूखण्ड था, जहाँ पर 'अटलांटियन' सभ्यता का विकासहुआ था. उस सभ्यता ने तकनीकी साधन जैसे- टेलीविजन, एक्स-रे, लेसर बीम और एन्टीग्रेविटी यन्त्र आदि का विकास कर लिया था, लेकिन इन साधनों के दुरूपयोग करने अपना विनाश कर लिया. यह विनाश ईसा से 28,000 वर्ष पूर्व हुआ था. इस सभ्यता से बचे हुए लोगों ने 'मय' और 'मिस्र' संस्कृति का विकास किया. मिस्र में जैसे विशालकाय पिरामिड बने हैं उसी प्रकार के विशालकाय पिरामिडों के अवशेष बारमूडा क्षेत्र में पाये जाते हैं. मिस्र के 'चोलुला' नामक पिरामिड में लगे पत्थरों का आयतन 3,88,20,000 घन गज है.

सन 1940 ई. में एडगर केयसी ने भविष्य कथन किया था कि भूकम्प के माध्यम से अटलांटिक महासागर में पुरानी सभ्यता के द्वीप समूह 1968 में ऊपर आने लगेंगे. 1968 में बहुत से गोताखोर, मछली पकडने वालों ने छिछले पानी में दीवारें, सडके और प्लेटफ़ार्म देखे. यह भविष्य कथन बिल्कुल सच निकला.

एडगर केयसी के अनुसार 'अटलांटिक सभ्यता का विस्तार 'सरगोसा' समुद्र से 'एजोर्स' तक है. रूस के प्रसिद्ध भूगर्भ शास्त्री डा.मेरिया क्लिनोवा ने 'एकेडेमी आफ़ साइन्स आफ़ यू.एस.एस.आर.' की ओर से प्रस्तुत की गई रिपोर्ट में भी इसका समर्थन किया गया है, कि इन चट्टानों के साथ किसी पुरातन सुविकसित सभ्यता का इतिहास जुडा हुआ है.

'केयसी' के अनुसार इस सभ्यता के लोगों ने सूर्य शक्ति का नियन्त्रण करके आधुनिक लेसर किरणों जैसे 'जादुई आग के पत्थर' बना लिए थे. इनसे निकलने वाली किरणें आँखों से नहीं देखी जा सकती थी परन्तु उनकी प्रतिक्रिया पत्थरों पर होती थी. पत्थरों से ऎसी शक्ति निकलती थी जो जमीन पर चलने वाले वाहन, पानी के ऊपर व भीतर तथा हवा में चलने वाले वाहनों पर भी अपना प्रभाव डाल सकती थी.

केयसी के कथनानुसार अटलांटिक सभ्यता के लोग 'एन्टीमैटर' के हथियार प्रयोग करते थे. उन्होंने यह भी बताया कि वे सूर्य शक्ति से ऎसी ऊर्जा पैदा कर सकते थे जो परमाणु का विखण्डन कर सकती थी और उसी के दुरुपयोग से वह सभ्यता विनष्ट हो गई. केयसी के कथन का समर्थन लन्दन के प्रसिद्ध वैज्ञानिक 'पैट्रिक स्मिथ' ने भी लिया है कि जो पिरामिड चित्र लिपि के अच्छे ज्ञाता हैं. स्मिथ के अनुसार अटलांटिक सभ्यता के उत्तराधिकारियों ने मैक्सिको, पेरू और मिस्र में पिरामिड बनाये हैं. इन पिरामिडों की बनावाट में पुनर्जन्म, आत्मा की अमरता, अनन्तता आदि सिद्धान्तों को शिल्पाकार दिया गया है. उन्हें ज्योतिर्विज्ञान का गहरा ज्ञान था-ऎसा पिरामिडों से पता चला है. 'चीजेन ईजा' नामक पिरामिड में पत्थरों की ऎसी रचना बनायी गई है कि सूर्य की किरणें सर्पाकार मार्ग से पिरामिड के मूल में बने सर्प के मुख जैसी आकृतियों में पहुँचती हैं. वर्ष में दो बार सूर्य की किरणें बसन्त और शरद ऋतु में इस पिरामिड के सर्पाकार मार्ग से चढती-उतरती देखी जाती है.

मिस्र के 'चेफ़्रेन' नामक विशाल पिरामिड में किसी गुप्त रहस्य का उद्घाटन करने के लिए 'यू.एस.ए.' और 'यूनाइटेड अरब रिपब्लिक" संयुक्त प्रयास कर रहे हैं.

वैज्ञानिकों की मान्यता है कि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल के क्षेत्र का कोई सूत्र इन पिरामिडों की रचना में छिपा है. ये पिरामिड बिल्कुल ठीक उसी स्थान पर बने हैं, जो धरती का केन्द्र हैं. प्रत्येक पिरामिड की सतहें समबाहु त्रिभुजाकर हैं. सदियों से प्रेतों का आव्हान करने वाले और देवताओं का आव्हान करने वाले कर्मकाण्डी समबाहु त्रिभुजों का उपयोग करते देखे जाते हैं. आज के प्रसिद्ध 'आकल्टिस्ट' फ़ास्ट, एलीस्टर, क्राडली आदि की मान्यता है कि इन त्रिभुजों की परिधि कभी अन्य लोकवासियों के बुलाने का माध्यम रही होगी.

इन दिनों पृथ्वी की वायु, जल,स्थिति, उर्वरता, खनिज सम्पदा एवं शक्ति का औद्योगिक तथा वैज्ञानिक प्रयोजनों के निमित्त व्यतिरेक किया जा रहा है. फ़लतः इन सभी क्षेत्रों में प्रदूषण विकिरण बढ रहा है. इस बढती विषाक्तता से होने वाले भावी संकट से सभी चिन्तित हैं. इस चिन्ता में सूक्ष्मदर्शी वैज्ञानिकों ने एक कडी जोडी है, कि प्रृथ्वी के सुव्यवस्थित चुम्बकत्व के साथ खिलवाड न की जाय. यह तथ्य बहुत समय पूर्व ही माना जा चुका है कि यदि पृथ्वी की सही धुरी का पता लगाया और उस पर कस कर एक घूँसा लगाया जा सके तो इतने भर से परिभ्रमण पथ में भारी अन्तर ही नहीं, महाविनाश का संकट उत्पन्न हो सकता है. चुम्बकत्व की निश्चित दिशाधारा में व्यतिरेक उत्पन्न होने के परिणाम कितने भयानक हो सकते हैं, इसे उपर्युक्त निर्धारण से भली प्रकार माना जा सकता है.

वृत्रासुर, हिरण्याक्ष, सहस्त्रार्जुन, रावण, कुम्भकरण जैसे अनेक वैज्ञानक बने. सब प्रकृति से छॆडखानी करने पर अपने और असंख्यों के लिए विपत्ति खडी कर चुके हैं. पिरामिड काल से पूर्व की मय-सभ्यता भी उसी उद्धत आचरण से विनाश के गर्त में गईं. इन दिनों उन्ही प्रयोगों की पुनरावृत्ति चल रही है. इसका क्या परिणाम हो सकता है, उसे अनुभव करके देखने की अपेक्षा यह अच्छा है, कि पूर्ववर्ती इतिहास से कुछ सीख और विनाश में कूदने से बचाया जाए. इन दिनों प्रकृति पर अधिकार करने की वैज्ञानिक महत्त्वाकांक्षाएँ धरती के चुम्बकत्व को डगमगा

सकती है और ऎसे भविष्य की विभीषिका उत्पन्न कर सकती हैं जिससे उबरना कदाचित फ़िर कभी भी सम्भव न हो सके.

9 गरजते-बरसते सावन के बीच खनकते राखी गीत और फ़िल्मी दुनिया

आकाश में अटे-पड़े बादलों के समूह को देखकर जहाँ एक ओर मन मयूर तरंगित हो रहा है, वहीं मयूरा भी अपने नीले-नीले पंखों को फ़ैला कर झूमता हुआ नृत्य करने में तल्लीन हो उठता है. एक कवि मन में अनेकों प्रश्न उठ खड़े होते हैं कि ऎसा क्या रहस्य है इन बादलों में कि मन तो मन, समूची कायनात ही थिरक उठती है. सीधी से बात है. अब से कुछ दिन पहले तक सूरज मामा अपनी प्रचण्ड किरनों से धरती को तपा रहा था. ताल-तलैया-बावड़ियां सूख गई थे. पेड़ झुलस गए थे. ढोर-डंगर यहाँ तक जंगली पशु भी प्यास बुझाने के लिए एक बूंद पानी को तरसने लगे थे. हरे-भरे जंगलों की खूबसूरती गायब हो गयी थी. नदियों की देह बुढ़ा गई थी. यहाँ तक कि आदमी भी एक मटका पानी की तलाश में दर-दर भटकने को मजबूर हो गया था. शहरों के तो और भी बुरे हाल थे. जगह-जगह प्रदर्शन हो रहे थे. हर कोई सरकार की नाकामी को कोस रहा था. सबकी अपनी-अपनी समस्याएं थीं लेकिन कोई चारा भी तो नहीं था. सरकार का अपना कोई पानी का खजाना तो होता नहीं कि जब चाहे तब खोलकर पानी बांटा जा सके. आज का मनुष्य भूल गया है कि उसके क्या कर्तव्य हैं, केवल और केवल वह अपने अधिकारों को ही याद रख पाता है.

दोषारोपण करना आज के मनुष्य की आदत बन गया है, जबकि इन तमाम तरह की परेशानियों की जड़ में वह खुद है. प्रकृति के इस अनमोल खजाने को उसने जी भर के लूटा. शायद यही एक मात्र कारण है कि चारों तरफ़ पानी को लेकर त्राहि-त्राहि मची हुई है.

आदमी चाहे जितना निष्ठुर हो जाए, प्रकृति अपने बनाए नियमों पर आज भी कायम है और समय आने पर सारी परेशानियों को हल करने में तत्पर हो जाती है.

सूरज की तपिश आखिर बनी भी रहती तो कितनी? एक दिन वह समय आ ही गया, जिसका का इन्तजार हर प्राणी को था. एक वह आकाश जिस पर चढ़कर सूरज आग बरसा रहा था, बादलों से अट गया है. बादल माने एक आस. सभी की आस अब पूरी होने वाली थी.

गरज-बरस के साथ आकाश से अमृत की बूंदे धरती पर बरसने लगीं. प्यासे पपीहे ने उड़ते हुए चार बूंदे अपनी चोंच में थामी और वह गदगद हो उठा और पागलों की तरह शोर मचाता हुआ घर-घर संदेशा देने उड़ने लगा. कोयल भी कब पीछे रहती. वह कभी इस डाल पर तो कभी उस डाल पर फ़ुदकती--कूदती पिहू-पिहू के स्वर निनादित करती नाचने-गाने लगी. नदियों की खोई हुई जवानी फ़िर लौट आयी. सूखा- मुरझाया जंगल फ़िर हरियल बाना पहनकर इठलाने लगा. धरती पर हरियाली की चादर फ़ैल गयी. ढोर-डंगरों को हरा चारा चरने को मिलने लगा. हरा चारा पाकर गायों के थनों में दूध उतरने लगा. जहाँ सारी कायनात खुशी में उबल रही थी, आदमी कब भला पीछे रहता. बरसते सावन में वह अपनी ढपली उठा लाया और गीत गाने लगा. महफ़िले जमने लगी. ढोलक सजने लगी. मंजीरे खनकने लगे और आल्हा-उदल के गीतों की स्वर-लहरी हवा की पीठ पर सवर होकर बस्ती-बस्ती डोलने लगी. आदमी शुरु से ही उत्सव-धर्मी रहा है. चाहे जैसा भी मौसम हो, चाहे जितनी भी परेशानियाँ ही क्यों न हो, सुख के ढांचे में कैसे ढालना है, उसे आता है.

सावन के शुरु होते ही त्योहारों की जैसे बाढ़ ही आ जाती है. पूरी में जगन्नाथजी के रथ यात्रा की तैयारियां होने लगी है. जैन मुनि महाराज चतुर्मास में किसी खास जगह रुककर साधना करने का मानस बनाने लगे हैं. व्यास पूजा ,गुरुपुर्णिमा, सावन के सोमवार, मंगला गौरी व्रत, हरियाली तीज, नाग पंचमी महोत्सव, रक्षा बंधन, बहुला चतुर्थी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, गोगानवमी, हरतालिका व्रत, श्री गणेश चतुर्थी, ऋषिपंचमी, दुबड़ी सप्तमी, श्रीराधाजन्माष्टमी, वामन जयन्ती, अनन्त चतुर्दशी जैसे व्रत और त्योहार की बाढ़ सी चली आती है.

10

बंधना राखी के कच्चे धागे में.

बंधन का शाब्दिक अर्थ तो बंध जाना, कैद हो जाना, जकडा जाना होता है, बंधना भला कोई चाहेगा भी क्यों कर.? लेकिन हर कोई बांधना चाहता है. यदि बंधने वाले के मन में कोई प्यारी सी ललक जगे और बांधने वाले के मन में कोई रस की निष्पत्ति हो तो कोई भी बंध जाना चाहेगा. मछली क्या जाल में बंधकर उलझना चाहेगी ? कदापि नहीं,लेकिन जाल के साथ बंधा चारा उसे अपने सम्मोहन में बांध देता है और वह बेचारी उसमें जा फ़ंसती है. चारा यहां उसके मन में एक लालित्य जगाता है. बस उसी लालच में वह बंध जाती है. यह तो रही मछली की बात. कोई रुपसी भी भला किसी के जाल में क्योंकर बंध जाना चाहेगी?.उत्तर होगा कदापि नहीं. लेकिन वह भी प्यार के महिन बंधनों में बंध जाती है. कृष्ण ने सभी जीव-जन्तुओं को,सभी नर-नारी सहित समूचे विश्व को अपने सम्मोहन में बांधकर रखा था. वे भला क्या मां यशोदा के बंधन मे आसानी से बांधे जा सकते थे.? यहां वह मां का प्यार था, दुलार था,और भी बहुत कुछ था कि कृष्ण ने उन्हें अपने आपको बांधे जाने के लिए प्रस्तुत कर दिया.

दरअसल, दूसरों को बांधने में एक निर्वचनीय सुख मिलता है, वहीं बंध जाने में भी एक सुख की निष्पत्ति होती है एक रस बांधने में आता है, वहीं एक रस बंध जाने में भी आता है. बंधने की प्रक्रिया अलग-अलग हो सकती है. स्त्री किसी पुरुष से, बच्चा अपनी मां से, बहन अपने भाई से,पुत्र अपने माता-पिता से एक अटूट बंधन में बंधे होते है लेकिन इसका पता न तो बंधने वाले को चल पाता है और न ही बांधने वाले को चल पाता है और इस तरह एक पडौसी दूसरे पडौसी से, पूरा एक गांव और संपूर्ण राष्ट्र एक सूत्र में बंधता चला जाता है. यह क्रम आज से नहीं, अनादिकाल से चला आ रहा है.

एक बहन अपने प्रिय भाई की कलाई में राखी बांधती है . राखी क्या है?. वह भी तो एक धागा ही है न ! जिससे वह उसे बांधती है. बहन के मन में अपने भाई के प्रति अनन्य प्रेम होता है,एक अटूट विश्वास होता है, एक ऐसा विश्वास कि वह आडॆ दिनों में उसकी रक्षा करेगा. कोई संकट यदि आ उपस्थित हुआ तो वह अपने प्राणी, की बाजी तक लगा देगा और अपनी बहन की रक्षा करेगा, उसके कठिन दिनों में एक संबल बन कर खडा हो जाएगा. भाई जब इस कच्चे सूत्र से बंधता है तो उसके मन में भी एक हिलोर पैदा होती है, एक गर्व का भाव पैदा होता है, एक आत्मविश्वास पैदा होता है,एक अपरिमेय शक्ति उसके मन में जागती है कि वह ऎसा कर सकेगा. राखी का शुद्ध शाब्दिक अर्थ भी तो यहां रक्षा भाव का जाग्रत होना होता है. बरसात के इस सुहाने मौसम में पड़ने वाले इस धागों के त्योहार को लेकर गीतकारों ने जमकर गीत लिखे. सिर्फ़ लिखे ही नहीं बल्कि उन तमाम भावनाओं को भी उसके माध्यम से इस तरह पिरोया है कि लोग खुशी से झूम उठें. कहीं उन्होंने उसे इतना गमगीन बना दिया कि आँखों से आँसू झरझरा कर बह निकले. उनके लिखे गीतों ने फ़िल्मों में धूम मचा दी. हम सब उन तमाम फ़िल्मों के निर्माताओं, गीतकारों, संगीतकारों, कलाकारों के ऋणी हैं कि उन्होंने बरसात को माध्यम बनाकर एक नया संसार रचा. एक नयी चेतना को आयाम दिया और उसे सदा-सदा के लिए अमर बना दिया.

आकाशवाणी सबकी वाणी. उसने भी इन सदाबहार गीतों को प्रसारण का हिस्सा बनाया. चाहे वह रिमझिम के तराने गाती बरसात हो या सावन का महिना, जिसमें रक्षाबन्धन जैसा पवित्र त्योहार हो ,कैसे पीछॆ रह सकता था. वह भी इस बरसते सावन में राखी के बन्धन पर फ़िल्माए गानों की झड़ी सी लगा देता है, जिसे सुनकर मन प्रसन्नता से खिल उठता है.

फ़िल्मों की अपनी निराली दुनिया

फ़िल्मों की अपनी एक निराली दुनिया है. जहाँ एक ओर वह अरबों-खरबों का व्यापार है, सपनों का रुपहला संसार है, मायावी दुनिया है, चमक-धमक का केन्द्र है वहीं दूसरी ओर वह मनुष्य के पक्ष में खड़ा होकर दुख भी परोसता और तो खुशियों की बारिश भी करता है. उसमें हर मौसम समाया हुआ है. भीषण गर्मी में वह पानी के लिए तड़फ़ती इंसानियत को रेखांकित करता है, वहीं बरसते सवान में खुशी के गीत भी गाता है. कभी वह विरहनी के संग खड़ा होता है तो कभी वह पारिवारिक उलझनों को सुलझाने में अहम भूमिका का निर्वहन करता नजर आता है. शायद ही कोई ऎसा त्योहार होगा, जिस पर उसने अपनी उपस्थिति न दर्ज कराई हो. बारिश में उसने कितनी ही हसिनाओं को भीगती, उत्तेजित होती अपने प्रेमी से चिपकी अपने प्रेम का इजहार करता दिखाया है. वहीं उसने हर त्योहारों पर नायब गीतों को सजाते हुए अपना अभिन्न अंग बनाया है.

रिमझिम-रिमझिम बरसते सावन में झूला झूलते नायक-नायिका हों अथवा भाई की कलाई पर रेशमी राखी बांधती बहना हो अथवा किसी कारणवश भाई के घर तक न जाने पर मिलती अपार पीड़ा हो, इसने बखूबी परदे पर उतारा है. फ़िर राखी का बंधन कुछ इस तरह का त्योहार है जिसके आने की प्रतीक्षा हर भाई-बहन को रहती है. इस सेलुलाईट के पर्दे ने उन तमाम बातों को बखूबी उजागर किया है

राखी पर फ़िल्माए गए सदाबहार गीतों पर एक नजर डालें और साथ में गुनगुनाते भी जाइए.

फ़िल्म **रेशम की डोर** में प्रख्यात गायिका लता मंगेशकर जी आत्माराम के निर्देशन में एक प्यारा सा गीत गाया- *बहना ने भाई की कलाई से प्यार बांधा है.*(सुमन कल्याणपुर) फ़िल्म **अनपढ़** मे लताजी ने ही इस गीत को गाया है–*रंग-बिरंगी राखी लेकर आई बहना, राखी बंधवा लो मेरे वीर.*(लता) फ़िल्म **छोटी बहन** में *भैया मेरे रखी के बन्धन को न भुलाना.(लता)* फ़िल्म **बंदिनी** में-*अबके बरस भेज भैया को बाबुल में.* फ़िल्म **चंबक की कसम** में - *चंदा से मेरे भैया से कहना, बहना याद करे* (लता), फ़िल्म **दीदी** मे-*मेरे भैया को संदेसा पहुंचाना चंदा तेरी जोत जले..* फ़िल्म **काजल** में *मेरे भैया, मेरे चंदा, मेरे अनमोल रतन, तेरे बदले मैं जमाने की कोई चीज न लूं(आशा भोंसले),* **हरे रामा, हरे कृष्णा** में किशोर का गाया गीत है-*फ़ूलों का तारों का सबका कहना है, एक हजारों में मेरी बहना है.* (किशोर कुमार), फ़िल्म **बेईमान** का गीत है-*ये राखी बंधन है ऎसा.(मुकेश-लता). बहना ने भाई की कलाई पर राखी बांधी है-* फ़िल्म **रेशम की डोर**, फ़िल्म **अनजाना** *-हम बहनों के लिए मेरे भैया,. नहीं मैं नहीं देख सकता तुझे रोते हुए, राखी धागों का त्योहार* **(राखी),**

मित्रों...इस नाजुक और पवित्र त्योहार पर अनेकानेक गीत है जिन्हें फ़िल्मों में स्थान मिला और भी अनेक गजलें और गीत हैं जिन्हें गजलकारों ने, कवियों ने गहराई में डूबकर-उतरकर लिखा है, जिसे एक आलेख में नहीं समेटा जा सकता.

फ़िलहाल इन सदाबहार गीतों में अपने को डूबाते हुए उनका आनन्द लीजिए और इन्तजार कीजिए उस त्योहार का जो इसी माह की अठारह तारीख को आने वाला है और धन्यवाद दीजिए उन कलमकारों को जिन्होंने नायाब गीतों को रचा है और उन तमाम फ़िल्मों के कलाकारों, संगीतकारों, गायकों और उन फ़िल्मों के डायरेक्टरों को जिन्होंने इसे परदे पर फ़िल्माया.